॥ श्री हितं वंदे ॥
॥ श्री राधावल्लभो जयति ॥

अष्टयाम सेवा पद्धति

श्री हित हरिवंश

।। श्री हितं वन्दे ।।

।। श्री राधावल्लभो जयति ।।

अष्टयाम सेवा पद्धति

प्रकाशक

श्री हित राधा केलि कुञ्ज ट्रस्ट,

परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन २८११२१

जिला - मथुरा (उत्तर प्रदेश)

Web: vrindavanrasmahima.com

Email: radhakelikunj@gmail.com

गुरु पूर्णिमा, सन् २०२१

द्वितीय संस्करण २००० प्रतियाँ

सहयोग राशि – ४० रुपये

श्रीहित राधावल्लभ सम्प्रदाय प्रवर्तक रसिकाचार्य वंशीस्वरूप
श्रीहित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी
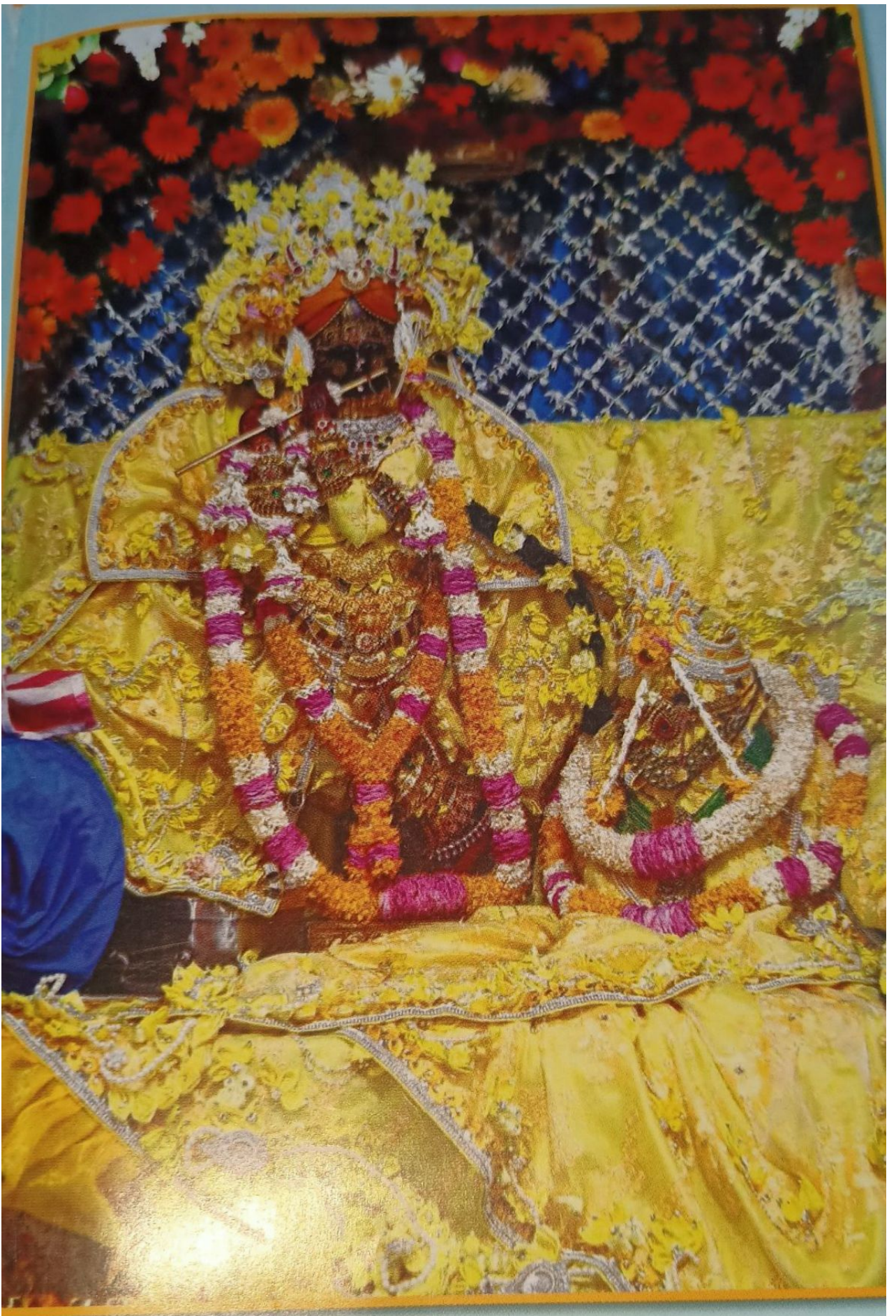
रूप-बेलि प्यारी बनी, प्रीतम प्रेम-तमाल ।
दोउ मन मिलि एकै भये, श्रीराधाबल्लभलाल ।।

नमो नमो गुरु कृपा निधान
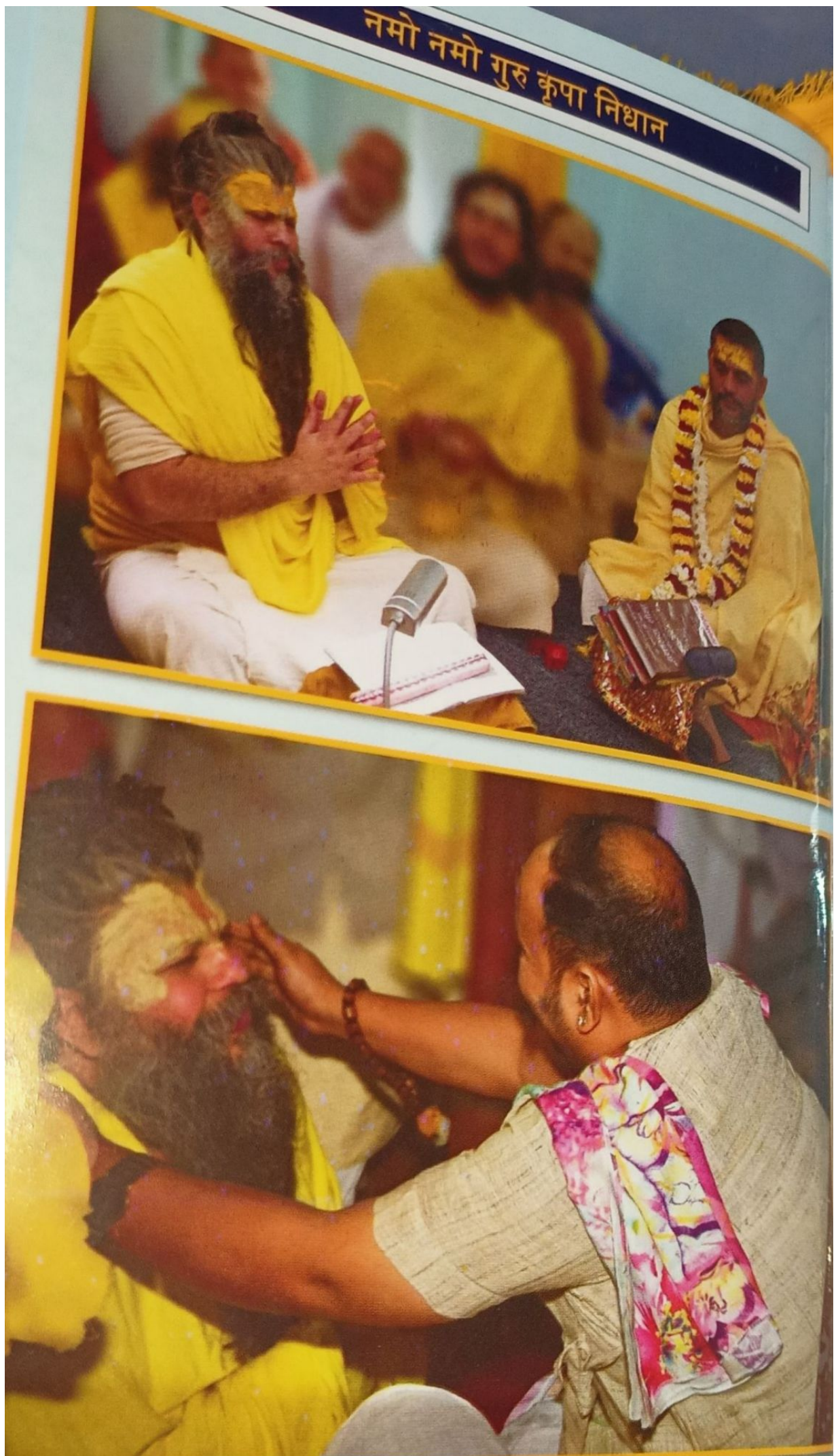
सम्पादकीय निवेदन

'श्रीराधिके तव कदा भवितास्मि दासी'

'कदास्यां श्रीराधे तव सुपरिचारिण्यहमहो'

तत्सुखभाव में निमग्न होकर सहचरी (दासी, किंकरी) स्वरूप से परमाराध्य हितस्वरूप दम्पति श्रीश्यामा-श्याम को आठों प्रहर दुलार करना, उनके मनोनुकूल परिचर्या करना, यही रसिक उपासक का परम साध्य अर्थात् चरम लक्ष्य होता है; अतः साध्य वस्तु की प्राप्ति की दृष्टि से वृन्दावनीय रसोपासना में अष्टयाम सेवा का विशेष महत्त्व है । श्रीसुधर्मबोधिनीकार लिखते हैं –

सेवा प्रगट अरु भावना, त्रिविधि कीजिये नित्त ।
तब रैनी हित गिरा में, रंगै सनेही चित्त ॥

रसिक उपासक को प्रगट-सेवा और सेवा-भावना नित्त करनी चाहिए। 'प्रगट-सेवा' से तात्पर्य मंगला से शयन पर्यन्त राग-भोग, आरती द्वारा श्रीजी के श्रीविग्रह, छविसेवा या नामसेवा जू की परिचर्या करना और 'सेवा-भावना (मानसी-सेवा)' से तात्पर्य श्रीजी की मंगला से लेकर शयन पर्यन्त की लीलाओं का चिन्तन करना अर्थात् किसी बाह्य साधन के बिना केवल मन के भावों द्वारा की जाने वाली इष्ट की परिचर्या । नित्य इस प्रकार जब उपासक अष्ट प्रहर प्रगट-सेवा और सेवा-भावना करता है तो उसका सनेही चित्त रसिकजनों की वाणियों एवं श्रीजी की लीलाओं में रंग जाता है और उसे कुञ्ज महल की टहल की प्राप्ति हो जाती है ।

यद्यपि आचार्यों ने **'मानसी सा परा मता'** मानसी भावना को श्रेष्ठ माना है किन्तु प्रारम्भिक उपासक के लिए बिना प्रगट-सेवा के मानसी-भावना की सिद्धि दुरूह है; इसीलिए **'तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा'** मानसी-सेवा की सिद्धि के लिए तनुजा-वित्तजा यानी प्रगट सेवा अत्यावश्यक है । 'सांगोपांग उपासक श्रीजी की अष्ट प्रहर प्रगट सेवा कर सकें' – इस दृष्टिकोण से **रसिक संत पूज्य श्री हित प्रेमानंद गोविंद शरण जी महाराज,** ने उपासकों की सुविधा के लिए सत्संग में संक्षिप्त अष्टयाम-सेवा का वर्णन किया, जिसका संकलन करके उसे **'अष्टयाम सेवा पद्धति'** नामक ग्रन्थ (वाणीजी) के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है; जो कि श्रीजी की अष्टयाम सेवा करने में अवश्य ही लाभकारी सिद्ध होगा।

विषय-सूची

•••

सेवा में उचित सावधानियाँ

सर्वप्रथम उपासक के लिए यह जानना आवश्यक है कि अमनियाँ और प्रसादी में क्या भेद होता है ?

अमनियाँ : - अमनियाँ शब्द का प्रयोग उन सभी वस्तुओं व पदार्थों के लिए किया जाता है, जो अभी तक प्रियालाल को अर्पित नहीं की गई हैं अर्थात् अनर्पित वस्तुएँ, भोग पदार्थ इत्यादि अमनियाँ कहलाते हैं ।

अमनियाँ शब्द का प्रयोग वस्तुओं को प्रियालाल को अर्पित करने योग्य बनाने के लिए भी किया जाता है, जैसे – फल, रसोई इत्यादि को अर्पित करने योग्य बनाना, सेवा के पात्र मार्जन करना, वस्त्रों को सिलकर तैयार करना इत्यादि। तात्पर्य, वस्तु या भोग-पदार्थों को प्रियालाल के उपयोग हेतु तैयार करने की प्रक्रिया को भी अमनियाँ करना कहते हैं ।

प्रसादी : - उपासक द्वारा प्रियालाल को अर्पित की गई कोई भी वस्तु या पदार्थ को जब प्रियालाल ग्रहण कर लेते हैं, तब उन्हें हम प्रसाद या प्रसादी वस्तु कहते हैं ।

उपासक को सेवा में यह सावधानी रखनी चाहिए कि अमनियाँ वस्तु कभी भी प्रसादी वस्तु से स्पर्श न होने पाए, यदि अमनियाँ वस्तु प्रसादी वस्तु से स्पर्श हो जाती है तो वह वस्तु भी प्रसादी हो जाती है। उसे प्रियालाल को अर्पित नहीं करना चाहिए ।

सेवा करते समय उपासक को पूर्ण स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए जैसे सेवा पदार्थों की स्वच्छता, सेवा में प्रयोग आने वाले वस्त्रों की स्वच्छता। स्वयं की स्वच्छता जैसे श्रीजी को स्पर्श करने से पहले एवं प्रसादी वस्तु के स्पर्श के बाद, स्वच्छ जल से हाथों को धोना इत्यादि।

उपासक को ध्यान रखना चाहिए कि प्रियालाल की सम्पूर्ण सेवा हो जाने के बाद ही प्रियालाल की प्रसादी वस्तु जैसे चंदन, इत्र, भोग प्रसाद इत्यादि का सेवन करना चाहिए । सेवा के बीच में किसी भी वस्तु का प्रयोग नहीं करना चाहिए ।

उपासक इस बात का ध्यान रखे कि जो भी वस्तु श्रीजी की सेवा के प्रयोग में आती है यदि वह भूमि आदि के स्पर्श से युक्त होती है तो उपासक पहले उसे स्वच्छ जल से प्रक्षालित करके ही श्रीजी की सेवा में प्रयोग करें। उचित तो यह है कि उपासक भूमि पर पहले कोई स्वच्छ वस्त्र आदि बिछाए फिर ही कोई भी वस्तु जो श्रीजी की सेवा में उपयोग होती है, उस पर रखें। उपासक को श्रीजी की सेवा में जाने से पूर्व इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए की उसके हाथ हमेशा स्वच्छ और पवित्र होने चाहिए। सहसा श्रीजी एवं श्रीजी के पार्षदों (श्रीजी की सेवा में प्रयोग होने वाले पात्र) को स्पर्श नहीं करना चाहिए।

॥ श्री हितं वन्दे ॥

॥ श्री राधावल्लभो जयति ॥

उपासक के लिये प्रातःकालीन वंदना

सर्वप्रथम उपासक को ब्रह्ममुहूर्त वेला में उठना चाहिए और अपनी शैया में ही श्रीसद्गुरुदेव भगवान् को मानसिक प्रणाम करके जो रसिक महापुरुषजन स्मृति में हों उनकी जयकार करना चाहिए। यथा –

महाप्रभु श्री हितहरिवंशचन्द्रजू महाराजकी जय !

श्री स्वामीहरिदासजू महाराजकी जय !

श्री हरिरामव्यासजू महाराजकी जय !

श्री हितसेवकजू महाराजकी जय !

श्री हितध्रुवदासजू महाराजकी जय !

समस्त संत-हरिभक्तों की जय !

तदनन्तर कुछ समय मन्त्रजप या नामजप करना चाहिए। फिर उपासक को दैनिक कृत्य शौच-स्नान आदि से निवृत्त होकर शरीर पर सूखी रज का लेपन करना चाहिए और तत्काल ही द्वादश तिलक की रचना करना चाहिए, यदि संभव न हो तो तीन तिलक तो अवश्य ही धारण करना चाहिए; मस्तक पर, कंठ पर और वक्षस्थल पर।

तिलक रचना करके अपनी कुटिया में जो श्रीजी की कुंज है अर्थात् जहाँ श्रीजी विराजमान हैं, उसके समीप पहुँचकर सबसे पहले अष्टसखियों का स्मरण करके उनकी जय-जयकार करना चाहिए। यथा –

ललिता, विशाखा, चंपक, चित्रा, तुंगविद्या, रंगदेवी ।

इंदुलेखा अरु सखी सुदेवी, सकल जूथ हित-सेवी ॥

श्री ललिताजू की जय! श्री विशाखाजू की जय! श्री चम्पकलताजू की जय! श्री चित्राजू की जय! श्री तुंगविद्याजू की जय! श्री रंगदेवीजू की जय! श्री इंदुलेखाजू की जय! श्री सुदेवीजू की जय!

अष्टसखियों को प्रणाम करके फिर श्रीहितसजनीजू जो इस भूतल पर श्री वृन्दावन बिहारिणी और बिहारीजू के नित्य रास-विलास का अनुभव कराने के लिये श्रीहरिवंशचन्द्रजू के रूप में प्रगट हुईं, उपासक को सेवा आरम्भ करने से पूर्व सर्वप्रथम उनको नमस्कार करना चाहिए –

नमो नमो जय श्री हरिवंश ।
रसिक अनन्य वेनुकुल मंडन, लीला मानसरोवर हंस ॥
नमो जयति श्रीवृंदावन सहज माधुरी, रास विलास प्रसंस ।
आगम निगम अगोचर श्रीराधे, चरन सरोज व्यास अवतंस ॥

फिर सेवकजू महाराज जो श्री हिताचार्य की रस-रीति को विस्तार पूर्वक समझाने के लिये प्रियाजू के अंश से प्रगट हुए हैं, उनको प्रणाम करना चाहिए; क्योंकि श्री सेवकजू महाराज की कृपा से ही आचार्य चरणों में प्रीति होती है और आचार्य चरणों की कृपा से ही नित्यबिहारी श्रीश्यामाश्याम के चरणारविन्द की सेवा-रीति का अनुभव होता है, सेवा-रीति में आसक्ति होती है । इसलिये उपासक को श्री सेवकजू महाराज की वंदना करना चाहिए –

प्रथम श्री सेवक पद सिर नाऊँ ।
करहु कृपा श्री दामोदर मोपै, श्री हरिवंश चरण रति पाऊँ ॥
गुन गंभीर व्यास नन्दन जू के, तुव परसाद सुजस-रस गाऊँ ।
नागरीदास के तुमहिं सहायक, रसिक अनन्य नृपति मन भाऊँ ॥

फिर रसिक उपासक को प्रियालाल के चरणारविन्द की सेवा-पद्धति का हृदय में अनुभव करने के लिये जिन श्री सद्गुरुदेव भगवान् ने श्री हरिवंश नाम का उपदेश किया, महामाधुर्यरस प्रदान करने वाले युगल चरणारविन्द

की शरणागति दी, सहचरीवपु में स्थित होने के लिये निजमन्त्र दिया, उन हितस्वरूप श्री सद्गुरुदेव भगवान् का ध्यान करते हुए इस पद के द्वारा उनको नमस्कार करना चाहिए –

नमो नमो गुरु कृपा निधान ।
असरन सरन दया करुना निधि, मंगल रूप हरन अज्ञान ॥
प्रनत जनन हित हरि चरितामृत, अभय करत करवावत पान।
आगम निगम सार सर्वोपरि, दरसावत आनंद रस थान॥
नाम सुकृत धन अपनी जीवनि, अति हित मानि देत बर दान।
वृन्दावन हित बलि पद पावन, भक्ति प्रकासित ज्यौं जग भान॥

इसके बाद सेवा आरम्भ करने के पूर्व उपासक को यह भावना करनी चाहिए कि 'न मैं पुरुष हूँ और न ही स्त्री। मैं केवल श्रीजी की सहचरी (दासी) हूँ – 'किशोरीमात्मानं किमिह सुकुमारीं नु कलये।' उपासक को अपने सहचरी स्वरूप की भावना करना चाहिए । सदैव हृदय में यह भाव रखना चाहिए कि 'मैं श्रीजी की सहचरी हूँ।'

•••

मंगला समय

(उपासक को ऐसी भावना करनी चाहिए कि 'कुटिया में जहाँ श्रीजी विराजमान हैं, यह बहुत सुन्दर नवनिभृतनिकुंज है। प्रातःकालीन वेला है, तत्सुखभाव में निमग्न बहुत-सी सहचरियाँ हमारे समीप में हैं। सुन्दर कुसुमशैया पर सम्पूर्ण रात्रि सुरतरसकेलि करके श्री प्रियाप्रीतम पौढ़े हुए हैं; ऐसी भावना करते हुए उपासक को इस पद का गायन करना चाहिए।)

आजु देखि ब्रजसुन्दरी मोहन बनी केलि ।
अंस अंस बाहु दै, किसोर जोर रूप रासि,
मनौ तमाल अरुझि रही सरस कनक बेलि ॥
नव निकुंज भ्रमर गुंज, मंजु घोष प्रेम पुंज,
गान करत मोर पिकन अपने सुर सों मेलि ।
मदन मुदित अंग अंग, बीच बीच सुरत रंग,
पल पल हरिवंश पिवत नैन चषक झेलि ॥

उपासक उपर्युक्त पद की भावना करते हुए देखे कि एक सखी श्री हितसजनीजू से कह रही है – "अरी सखी! प्रियालाल को कैसे जगायें? क्योंकि ऐसा लग रहा है कि सम्पूर्ण रात्रि प्रियालाल प्रेमकेलि में मगन रहे हैं और अभी तो सोये हैं, हम इनको कैसे जगायें?"

अबहि नैंकु सोये हैं अरसाय ।
काम केलि अनुराग रस भरे, जागे हैं रैंन बिहाय ॥
बार-बार सुपनेहू सूचत, सुरत रंग के भाय ।
यह सुख निरखि सखीजन प्रमुदित, नागरीदासि बलि जाय ॥

श्रीहितसजनीजू सखियों से कह रही हैं – "हे सखियों! यद्यपि प्रियाप्रीतम ने सम्पूर्ण रात्रि प्रेमरसकेलि में व्यतीत की है और अभी-अभी सोये हैं, पर सखी! प्रियालाल को क्षुधा लगी होगी।" फिर श्रीललिताजू को

प्रेरित करती हुई कहती हैं – "हे ललिताजू! आप धीरे से ऐसा बीणा वादन कीजिए कि प्रियाप्रीतम सहज में जग जायें।"

श्री ललिताजू श्रीजी की सेवा में परम प्रवीण हैं। प्रातःकालीन बेला है, श्री हितसजनीजू के सुखमय वचन सुनकर श्री ललिताजू प्रियाप्रीतम को जगाने के लिये अद्भुत रसमय वीणावादन करने लगती हैं –

प्रात समै नव कुंज द्वार है, ललिताजू ललित बजाई बीना ।
पौढ़े सुनत स्याम श्रीस्यामा, दंपति चतुर प्रवीन प्रवीना ॥
अति अनुराग सुहाग परस्पर, कोक-कला गुन निपुन नवीन नवीना ।
श्रीबिहारीनदासि बलि-बलि बंदसि पर, मुदित प्रान न्यौछावर कीना ॥

जब वीणा की अत्यन्त मधुर तान युगलसरकार के कानों में पड़ती है तो उनके श्रीअंग में हलचल-सी होती है । यह देखकर समस्त सखियों के हृदय में अपार आनन्द हो रहा है। सब सखियाँ प्रियालाल के शैया से उठने की शोभा का दर्शन कर रही हैं –

भोर भयैं सहचरि सब आईं । यह सुख निरखत करत बधाई ॥
कोउ बीना-सारंगी बजावैं । कोउ इक राग विभासहि गावैं ॥
एक चरन हित सौं सहरावै । एक वचन परिहास सुनावै ॥
उठि बैठे दोउ लाल रँगीले । बिथुरी अलक सबै अँग ढीले ॥
घूमत अरुन नयन अनियारे । भूषन-वसन न जात सम्हारे ॥
कहुँ अंजन कहुँ पीक रही फबि । कैसैं कही जाति है सो छबि ॥
हार-बार मिलिकैं अरुझाने । निशि के चिह्न निरखि मुसिकाने ॥

कुछ सखियाँ प्रियालाल के शैया के समीप आ गई हैं और कुछ कुंजरन्ध्रों से प्रियालाल की इस अद्भुत शोभा का दर्शन कर रही हैं। श्री हितसजनीजू शैय्या के समीप आकर युगलसरकार के चरणकमलों को सहला

रही हैं। कोई वीणावादन कर रही हैं, कोई विभास राग में मधुर गान कर रही हैं, कोई प्रियालाल से निवेदन कर रही हैं।

(यदि उपासक के पास श्रीजी की नाम सेवा, छवि सेवा है तो वह प्रगट शैया पर भावना करे कि श्री प्रियालाल पौढ़े हुए हैं, धीरे-धीरे उनके चरण सहलाते हुए उनको जगाए । यदि प्रियाप्रीतम की विग्रह सेवा है तो वह शैया पर शयन परायण प्रियाप्रीतम के चरण सहलाते हुए इस पद का गान करते हुए उन्हें उठाए।)

जागौ मोहन प्यारी राधा ।

ठाढ़ीं सखीं दरस के काजैं, दीजै दरस जु होय न बाधा ॥
सुनत वचन हँसि उठे जुगलवर, मरगजे बागे फबि रहे दोऊ तन ।
वारत प्राननि लेत बलैया, देखि-देखि फूलत मन ही मन ॥
रंग भरे आनन्द जम्हावत, अंस अंस धरि बाहु रहे कसि ।
जै श्री कमलनयन हित या छबि ऊपर, वारौं कोटिक भानु मधुर शशि ॥

सहचरी की विनय भरी बात सुनकर के हँसते हुए युगलसरकार शैया से उठते हैं। प्रातःकालीन वेला में सुरतचिन्हों से युक्त पलटे हुए वस्त्र अर्थात् प्रियाप्रीतम ने एक दूसरे के पीताम्बर और नीलाम्बर पलट करके धारण किये हुए हैं। आहा! उस समय प्रियाप्रीतम की कैसी अद्भुत शोभा हो रही है –

आजु सुख देखि सिराने नैंन ।

जो इनकैं होती सत रसना, तब कछु कहते बैंन ॥
यह अलसानि उठनि सज्या की, हार बार लपटानि ।
मो उर माँझ खगी री सजनी, नाँहिंन होत बखानि ॥
तैसीयै नील पीत पट लपटनि, गोरे साँवल गात ।
सुरझावत हँसि हँसि पिय प्यारी, झपकि झपकि पल जात ॥
अँखियाँ भईं रूप हरिहाई, बहुरि न आई हाथ ।
वृन्दावन हित यौं अलि सूचति, बिबस भईं कहि गाथ ॥

मंगला भोग

श्यामाश्याम जब शैया से उठकर के सिंहासन पर विराजमान हुए तो हितसजनीजू ने श्यामाश्याम के सुन्दर मुखकमल का प्रक्षालन किया और कोमल वस्त्र से उनके मुखचन्द्र को पोंछा। एक सुन्दर रत्नजटित स्वर्ण की चौकी विराजमान की और सुन्दर मंगल भोग जो पहले से ही महाप्रेम में भरकरके सहचरियों ने प्रियालाल के आरोगने के लिये तैयार किये हैं, उसे हितसजनीजू लाकर उस चौकीपर रखती हैं। प्रियाप्रीतम मंगला भोग आरोगने लगते हैं।

(उपासक को प्रियाप्रीतम के समक्ष चौकी पर जल का पात्र, आचमन पात्र, मुख प्रक्षालनार्थ पात्र, स्वच्छ सुकोमल वस्त्र रख कर माखन, मिश्री, मोदक, मेवा, दूध, मलाई, आदि प्रियाप्रीतम के अनुकूल भोग सामग्री (अपने भाव और सामर्थ्य के अनुसार) एवं शीतल जल विराजमान करके पहले प्रियाजू को फिर लालजू को इस पद का गायन करते हुए भोग पवाना चाहिए।)

मंगल भोग अधिक रुचिकारी।
माखन, मिश्री, मोदक मेवा, सखियन आन धरी भरि थारी ॥
आलस बलित नैंन झपकौहैं, सोहत करतल जुत सुकुमारी।
प्रियहिं निहोर मुख देत ग्रास पुनि, खात खवावत करत हहारी ॥
गीत निर्त्त अरु वाद्य करन हित, सब सखी आन भईं इकठाँरी।
ललिता ललित देत मुख बीरी, (जै श्री) कमलनयन छबि पर बलिहारी॥

श्रीहितसजनीजू ने सुन्दर-सुन्दर, भोग-सामग्री – माखन, मिश्री, मोदक, मेवा, मलाई आदि रसमय पदार्थ अपने करकमलों से पहले प्रियाजू को फिर श्रीलालजू को पवाया। फिर श्री हितसजनीजू ने जब देखा कि प्रियाप्रीतम भोग आरोग चुके हैं, तब उन्होंने यमुना जल से उन्हें आचमन कराया और श्रीललिताजू ने सुन्दर पान की बीरी पवाई।

मंगला आरती

मंगला भोग आरोग कर प्रियालाल सुंदर सिंहासन पर विराजमान हैं। इतने में प्रेम में सनी हुईं समस्त सहचरियाँ श्रीप्रियालाल की मंगला आरती तैयार करके लाईं और सब सुन्दर-सुन्दर गान-वाद्य आदि के साथ युगलसरकार की मंगला आरती करती हैं।

(उपासक को एक चौकी जल से स्वच्छ कर उस पर सुन्दर पुष्पों से श्रृंगारित एक थाली में एक दीपक अथवा पंचदीप विराजमान करना चाहिए एवं जल वारने के लिए सुंदर पात्र में जल, एक घंटी जिसमें गरुड़ चिन्ह ना हो, चँवर, मोरछल पास में विराजमान करना चाहिए । उपासक को इन पदों का गायन करते हुए प्रेमपूर्वक युगलसरकार की मंगला आरती* करना चाहिए।)

प्रातहि मंगल आरति कीजै ।
युगल किशोर रूप रस माते, अद्भुत छवि नैननि भरि पीजै ॥
ललिता ललित बजावति वीणा, गुण गावति सुनि जीवन जीजै ।
जय श्री रूपलाल हित मंगल जोरी, निरखि प्रान न्यौछावर कीजै ॥

....

निरखि आरती मंगल भोर । मंगल श्यामा श्याम किशोर ॥
मंगल श्रीवृन्दावन धाम । मंगल कुंज महल अभिराम ॥
मंगल घण्टा नाद सु होत । मंगल थार मणिनु की जोत ॥
मंगल दुन्दुभि धुनि छबि छाई । मंगल सहचरि दरसन आईं ॥

---

*आरती का एक विधान है – तीन बार श्रीचरणों में, पाँच बार वक्षःस्थल में, पाँचबार हस्तकमल में, सातबार श्रीमुखकमल में और फिर सातबार पूरे श्रीअंग की आरती उतारना चाहिए। फिर सुन्दर जल लेकर के इसी क्रम से जल वार कर कुछ देर चँवर और फिर मोरछल ढुलाना चाहिए ।

मंगल बीन मृदंग बजावैं । मंगल ताल झाँझ झर लावैं ॥
मंगल सखी यूथ कर जोरैं । मंगल चँवर लिये चहुंऔरैं ॥
मंगल पुष्पांजलि वरषाई । मंगल ज्योति सकल बन छाई ॥
जैश्रीरूपलाल हित हृदय प्रकास । मंगल अद्भुत युगल विलास ॥

समस्त सखियों सहित श्री हितसजनीजू मंगला आरती कर रही है, कोई सखी वीणा बजा रही है, कोई चँवर ढुला रही है, कोई आरती गा रही है, कोई प्रियाप्रीतम को आनन्दित करने के लिये नृत्य कर रही हैं, कोई पुष्पांजलि समर्पित कर रही हैं। इस प्रकार सभी सखियों ने मंगला आरती सम्पन्न की।

•••

सुरतान्त छवि वर्णन

इसके बाद, श्री हितसजनीजू सखियों से कहती हैं – "हे सखियों हमारे प्रियाप्रीतम की प्रातःकालीन सुरतांत छवि तो देखो, इनकी कैसी अद्भुत शोभा हो रही है।"

(उपासक को इन पदों का भावना करते हुए गायन करना चाहिए।)

आजु बन राजत जुगल किशोर ।
नंदनंदन वृषभानुनन्दिनी उठे उनीदे भोर ॥
डगमगात पग परत सिथिल गति, परसत नख ससि छोर ।
दसन वसन खण्डित, मषि मंडित गंड तिलक कछु थोर ॥
दुरत न कच करजन के रोके अरुन नैंन अलि चोर ।
(जैश्री) हित हरिवंश सँभार न तन-मन सुरत समुद्र झकोर ॥

तत्पश्चात् श्री हितसजनीजू श्रीप्रियाप्रीतम से हास-परिहास करती हैं। वे प्यारीजू से कहती हैं कि "हे प्रियाजू! आपसे रात्रि में जो प्रीतम का मिलन हुआ है, उसे आप तो छुपाना चाहती हैं, पर आपके नेत्र, आपके श्रीअंगों के वस्त्राभूषण व सुरतचिन्ह ये सब चुगली कर रहे हैं, प्रीतम के साथ मिलन की सूचना दे रहे हैं।"

तेरे नैन करत दोऊ चारी ।
अति कुलकात समात नहीं कहुँ मिले हैं कुँजबिहारी ॥
बिथुरी माँग, कुसुम गिरि गिरि परैं, लटकि रही लट न्यारी ।
उर नख रेख प्रगट देखियत है, कहा दुरावत प्यारी ॥
परी है पीक सुभग गंडन पर, अधर निरँग सुकुमारी ।
(जैश्री) हित हरिवंश रसिकनी भामिनि, आलस अँग अँग भारी ॥

इस तरह श्रीहितसजनीजू हास-परिहास करके प्रियाप्रीतम और समस्त सखियों को आह्लाद प्रदान कर रही हैं।

•••

मंगला उपरान्त (प्रातःकालीन) वनविहार

तदनंतर श्री हितसजनीजू प्रियाप्रीतम से वनविहार के लिए निवेदन करती हुई कहती हैं, "हे युगलवर ! आपको सुख प्रदान करने के लिए श्री वृंदावन ने प्रातःकालीन इस मधुर वेला में अत्यन्त अद्भुत शोभा का विस्तार किया है। आप अपनी प्रेमभरी चितवन से निहार कर श्रीवृंदावन के समस्त खग-मृग वृंदों एवं लताओं के सेवा भावों को सफल करें । हे प्यारीजू! आप प्रातःकालीन वनविहार के लिए पधारिए।" हितसजनीजू का प्रेमपूर्ण निवेदन सुनकर प्रियालाल गलबहियाँ दिए हुए वनविहार के लिए पधारते हैं।

(उपासक को अपनी कुटिया में विराजमान श्रीजी की मंगला कर लेने के बाद जहाँ श्रीजी विराजमान हैं, वहाँ सामने सुन्दर सोहिनी लगाकर, पवित्र पौंछा लगाना चाहिए । श्रीजी की सेवा के जो पार्षद अर्थात् पात्र हैं, उनका मार्जन करना चाहिए। चौकी मार्जन करके उस पर मँजे हुए पात्र विराजमान करना चाहिए और श्री श्यामाश्याम की वनविहार लीला के इन पदों का गायन करते हुए वनविहार लीला की भावना करनी चाहिए।)

आजु प्रभात लता मंदिर में, सुख बरसत अति हरषि युगल वर ।
गौर श्याम अभिराम रंग भरे, लटकि लटकि पग धरत अवनि पर ॥
कुच कुमकुम रंजित मालावलि, सुरतनाथ श्रीश्याम धाम धर ।
प्रिया प्रेम के अंक अलंकृत, चित्रित चतुर शिरोमणि निजकर ॥
दम्पति अति अनुराग मुदित कल, गान करत मन हरत परस्पर ।
(जैश्री) हित हरिवंश प्रसंश परायन, गायन अलि सुर देत मधुर तर ॥

परस्पर गलबहियाँ दिए हुए प्रियाप्रीतम अब कुंजद्वार पर आ रहे हैं। प्रियाप्रीतम आकर जब लतामन्दिर के द्वार पर विराजमान होते हैं, तब आहा! युगलसरकार की कैसी अद्भुत शोभा हो रही है। सखियाँ इस अद्भुत छविका पान कर रही हैं। प्रियाप्रीतम श्रीवृन्दावन की अत्यन्त साँकरी बीथियों में विहरण कर रहे हैं और विविध प्रकार की रसक्रीड़ा कर रहे हैं। श्रीहितसजनीजू प्रियालाल के इस वनविहार को एक पद में वर्णन कर रही हैं। श्रीहितसजनीजू सखियों से कहती हैं – **बन की कुंजन कुंजन डोलन ।**

निकसत निपट सांकरी बीथिन परसत नाहि निचोलन ॥
प्रात काल रजनी सब जागे सूचत सुख द्दग लोलन ।
आलसवन्त अरुण अति व्याकुल कछु उपजत गति गोलन ॥
निर्त्तन भृकुटि बदन अम्बुज मृदु सरस हास मधु बोलन ।
अति आसक्त लाल अलि लम्पट बस कीने बिनु मोलन ॥
बिलुलित सिथिल श्याम छूटी लट राजत रुचिर कपोलन ।

रति विपरीत चुंबन परिरंभन चिबुक चारु टक टोलन ॥
कबहुँ स्रमित किसलय सिज्या पर मुख अंचल झक झोलन ।
दिन हरिवंश दासि हिय सींचत वारिध केलि कलोलन ॥

इस तरह उपासक को पद एवं भाव के द्वारा वनविहार की शोभा का अवलोकन करना चाहिए।

•••

स्नान समय

प्रातःकालीन वनविहार में सखियाँ विविध प्रकार से प्रियाप्रीतम को रसक्रीड़ा कराती हैं। युगलसरकार मंगल वनविहार करते हुए तृप्त ही नहीं हो रहे हैं, उनके स्नान का समय हो रहा है। श्री ललिताजू प्रियाप्रीतमसे निवेदन करती हैं – "हे युगलसरकार! आप कृपा करके स्नानकुंज में पधारें।"

स्नान कुंज पग धारिये, मेरी लाड़ गहेली ।
अंग सुधंग आलस भरे, बाढ़ै आनन्द बेली ॥
चलहिं नहिं नागर नवल, अटके रस केली ।
बतियन लग संग लै चली, ललिता अलबेली ॥

प्रियाप्रीतम गलबहियाँ दिए हुए, मंद-मंद मुस्कुराते हुए, अपने श्रीअंगोंसे शोभा-सौन्दर्य को बिखेरते हुए, सखियों को महान अह्लाद प्रदान करते हुए उस विशाल स्नानकुंज में पधारते हैं। सखियों ने पहले से ही स्नान की सुन्दर व्यवस्था कर रखी है। सुन्दर मणिमय चौकी है। समस्त सखियाँ कोई उबटन बना रही है, कोई प्रियालाल को अत्यन्त सुख पहुँचाने वाली ऋतु के अनुसार सुगन्धित जल आदि सुन्दर-सुन्दर स्नान की सेवासौंज (सेवा सामग्री) सँवारकर स्नान के लिये, एक चौकी पर प्रियाजू और एक चौकीपर लालजू को विराजमान कराके सखियाँ सुन्दर-सुन्दर सुगन्धित द्रव्यों से मिश्रित उबटन लगाकर अनुकूल जलसे पहले प्यारीजू को स्नान कराने लगती हैं।

(उपासक अपनी कुटिया में विराजमान श्रीजी को स्नान कराये। यदि छवि रूप में श्रीजी विराजमान हैं तो बहुत सुकोमल वस्त्र पर थोड़ा-सा ऋतु के अनुसार शीतल या गुनगुना जल छिड़ककर पहले प्रियाजू को फिर लालजू को वस्त्र से प्रक्षालित करना चाहिए। उस वस्त्र को प्रतिदिन धोकर के सुखा लेना चाहिये और यदि श्रीराधा नामसेवा है तो ऋतु अनुकूल जल और सुगन्धित द्रव्य (गुलाब जल आदि) यमुना जल में मिश्रित करके श्री नामसेवाजू को स्नान कराना चाहिये। यदि श्रीविग्रहसेवा है तो श्रीविग्रह का स्नान कराना चाहिए। स्नान कराने के बाद स्वच्छ जल से हाथ प्रक्षालन करना चाहिए। स्नान कराते समय नीचे दिए गये पद का गायन करना चाहिए।)

मनिमय चौकी आनि बिछाई । तापर नवल कुँवरि बैठाई ॥
सिर पर सौंधौ सरस लगायौ। उबटन अंग अंग सखिनु करायौ ॥
कराइ उबटनि अंग सखियनि केस जूरा खोलि कैं ।
देहु आड़ो तानि अम्बर कह्यौ ललिता बोलि कैं ॥
राजति मनौं घन बिगत दामिनि कुँवरि गोरे तन दिपै ।
बदन पर रही झूमि अलकैं राहु ग्रह मनु ससि छिपै ॥
उभय भुजा सखि अंसनि सोहै । मर्दन करत लाल मन मोहै ॥
मनु मुदु कनक लता बिबि साखा। निकसि चली बढिवे अभिलाषा॥
अभिलाष बढिवे मनहुँ सजनी करज नव पल्लव बनैं ।
सुठि होत भूषन नाद मानौ मैंन मंत्र पढ़त घनैं ॥
अरबरत लोचन बसन ओलैं छबि अनेक जु बिधि भरी ।
मनु मधुप पाँति बिदारि खंजन उडनि की गति मन धरी ॥
श्रवन तरौंना विलुलित भारी । मनु विवि दिनकर जोति पसारी ॥
अलक मनौ आड़ौ तन सजनी । मेलि दियौ मन मावस रजनी ॥
कियौ मावस रैनि रवि सौं मेल सजनी सुभ घरी ।
फूले कमल कर चरन आनन आजु विधि वाँछित करी ॥

नाना सुगन्ध सँजोइ जल इहि विधि उबटि अन्हवाइकैं ।
पट मिहौ तनहि अँगौछि पहिराये बसन चुनि आइकैं ॥
उझकत स्याम प्रिया तन ओरी। लोचन भये बिधु बदन चकोरी ॥
मोहन परमरसिक री माई । बिनु देखैं अति ही अकुलाई ॥
अकुलाई मोहन दरस कारन प्रेम तन मन छाइयौ ।
कर जोरि है आधीन अपनौ सखी मरमु जनाइयौ ॥
वृन्दावन हित रूप सजनी बचन स्यामहि दीजियै ।
बलि गई नागर नेकु बिरमौ आप मज्जन कीजियै ॥

स्नान के समय युगल के बीच में सखियाँ झीना पर्दा कर देती हैं। झीना पर्दा करते ही लालजू अत्यन्त व्याकुल हो उठते हैं, क्योंकि प्रियालाल दो तनधारी किन्तु एक प्राणवाले हैं और लालजू की प्रियाजू में अत्यन्त प्रगाढ़ आसक्ति है। दोनों के बीच में ऐसा झीना पट है कि यद्यपि लालजू को प्रियाजू का दर्शन हो रहा है, फिर भी लालजू अत्यन्त व्याकुल हैं और अधीन होकर के सखियों के आगे हाथ जोड़ते हुए कहते हैं, "तुम सबने हमारे और प्यारीजू के बीच में आवरण रूप ये जो पट डाल दिया है, ये अन्तराय हमसे सहा नहीं जा रहा है।"

तब सखियाँ कुछ समय विचार करके लालजू से कहती हैं – "आपको इस रूप में तो हम प्रियाजू के समीप में विराजमान नहीं कर सकती लेकिन एक उपाय है, यदि आपको सहचरीवेष धारण करा दें तो आपको प्रियाजू के श्रीअंगों का दर्शन और उनके श्रीअंगों की सेवा मिल जायेगी।"

लालजू ने कहा – "ठीक है, सखी! अतिशय शीघ्र हमें सहचरी बना दो।"

तब श्रीहितसजनीजू लालजू से कहती हैं – "मैं आपकी व्याकुलता देखकर आपको सखी तो बना दूँगी लेकिन एक समस्या आ रही है। वह यह है कि आपके जो अरुण अधर हैं, उनको मैं किस प्रकार छिपाऊँ?"

अधर अरुण तेरे कैसे कै दुराऊँ ।

रवि ससि संक भजन कियौ अपवस, अद्भुत रंगन कुसुम बनाऊँ ॥
सुभ कौसेय कसिब कौस्तुभमनि, पंकज-सुतन लै अंगनु लुपाऊँ ।
हरषित इन्दु तजत जैसे जलधर, सो भ्रम ढूंढि कहा हौं पाऊँ ॥
अम्बुनि दम्भ कछू नहीं व्यापत, हिमकर तपै ताहि कैसे कै बुझाऊँ ।
(जैश्री) हित हरिवंश रसिक नवरंग पिय, भृकुटी भौंह तेरे खंजन लराऊँ ॥

इस तरह चतुर सखी श्रीहितसजनीजू कुछ समय श्रीलालजू को बातों में उलझा लेती हैं, इतने में प्रियाजू का स्नान हो जाता है और प्रियाजू उचित वस्त्र धारण कर लेती हैं। फिर सखियाँ पर्दा हटाकर लालजू से कहती हैं – "हे प्यारे! अब आप अपनी प्रियाजू के भर नेत्र दर्शन करो।"

इसके बाद प्रियाजू के स्नान से बचा हुआ एवं उनके श्रीअंगों से स्पर्श किया हुआ जो उबटन है, उसी को लेकर सखियाँ लालजू को स्नान कराती हैं –

सो उबटन तन श्याम करायौ । परम रसिक पिय अति सुख पायौ ॥
पायौ परम सुख रसिक नागर उबटनै तन परसि कैं ।
अति नेह कोबिद लाल के हिय प्रेम आयौ सरसि कैं ॥
आसक्त रूप किशोर लोचन लोल नहिं नागरि लखी ।
मनु धरहु धीरज नैंन प्रीतम समुझि तब बोली सखी ॥

(इस प्रकार उपासक को प्रियाप्रीतम की स्नान सेवा सम्पन्न करके उनके श्री अंगों को सुकोमल वस्त्र से अँगोछ कर (पोंछकर) उनके श्रृंगार की तैयारी करनी चाहिए।)

•••

श्रृंगार समय

प्रियाप्रीतम का स्नान हो जाने के पश्चात् प्रियाजू को नीलाम्बर और लालजू को पीताम्बर धारण कराकर उनको श्रृंगारित करने हेतु श्री विशाखाजू निवेदन करती हैं – "हे प्यारीजू! हे प्यारेजू! आप श्रृंगारकुंज में पधारिये।"

सिंगार कुंज लै चली विशाखा करति करति मननि मनुहारैं ।
जगमग उठी जोति मणिगन की दीपक दोति निवारैं ॥
ठौर ठौर कुसुमावलि फूली मधुप मधुर गुंजारैं ।
'अलबेली' अलि रतन सिंहासन बैठी अंग सिंगारैं ॥

विविध मणिगणों के प्रकाश से ज्योतिर्मय अत्यन्त सुंदर श्रृंगारकुंज में सहचरियाँ श्रृंगार की सौंज लिये हुए, श्रृंगारमूर्ति प्रियाप्रीतम को सुन्दर सिंहासन पर विराजमान करके उनका सुन्दर श्रृंगार करना आरम्भ करती हैं। सखियों के साथ हितसजनीजू सबसे पहले प्रियाजू का श्रृंगार करती हैं –

ब्रज नव तरुनि कदम्ब मुकुटमनि, श्यामा आजु बनी ।
नख शिख लौं अँग अंग माधुरी, मोहे श्याम धनी ॥
यौं राजत कवरी गूंथित कच, कनक कंज वदनी ।
चिकुर चंद्रिकन बीच अर्ध बिधु, मानौं ग्रसित फनी ॥
सौभग रस सिर स्रवत पनारी, पिय सीमन्त ठनी ।
भृकुटि काम-को-दंड, नैन सर, कज्जल रेख अनी ॥
तरल तिलक, ताटंक गंड पर, नासा जलज मनी ।
दसन कुंद, रसाधर पल्लव, प्रीतम मन समनी ॥
चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि, साँवल बिंदुकनी ।
प्रीतम प्रान रतन संपुट कुच, कंचुकि कसिब तनी ॥
भुज मृनाल बल हरत बलय जुत, परस सरस स्रवनी ।
श्याम सीस तरु मनौ मिडवारी, रची रुचिर रवनी ॥

नाभि गंभीर मीन मोहन मन, खेलन कौं ह्रदनी ।
कृस कटि पृथु नितम्ब किंकिनि व्रत, कदलि खंभ जघनी ॥
पद अम्बुज जावक जुत, भूषन प्रीतम उर अवनी ।
नव नव भाय बिलोभि भाम इभ, विहरत वर करनी ॥
(जै श्री) हित हरिवंश प्रशंसत श्यामा कीरत विशद घनी ।
गावत स्त्रवनन सुनत सुखाकर विश्व दुरित दवनी ॥

प्रियाजू के श्रृंगार के उपरान्त सखियाँ श्रीलालजू का श्रृंगार कर रही हैं। इस तरह श्री हितसजनी जू और समस्त सखियाँ मिलकरके युगलसरकार का अद्भुत श्रृंगार करती हैं।

(उपासक को उपरोक्त भावना से पदों का गायन करते हुए प्रियाप्रीतम का श्रृंगार करना चाहिए। सर्वप्रथम प्रियालाल की इत्र सेवा ऋतु अनुकूल इत्र के द्वारा करनी चाहिए । तत्पश्चात् सुंदर पत्रावली की रचना करके उन्हें विविध वस्त्राभूषणों से अलंकृत करना चाहिए। ऋतु अनुकूल सुंदर-सुंदर पुष्पों की माला धारण कराकर चरणों में तुलसी दल तथा पुष्प अर्पण करना चाहिए।

इत्र सेवा – **श्रृंगार सेवा में मृदु एवं सुखद इत्र का प्रयोग ऋतु के अनुसार होना चाहिए । श्रीजी के श्रीअंगों पर कोई भी ऐसी वस्तु का प्रयोग नहीं करना चाहिए, जो जलन, छरछराहट आदि उत्पन्न करती हो।**

ऋतु के अनुसार इत्र का प्रयोग – बसंत ऋतु–गुलाब, ग्रीष्म ऋतु–मोगरा, चन्दन, (अधिक ग्रीष्म) खस, वर्षा ऋतु (पावस)–केवड़ा, शरद ऋतु–गुलाब, हेमंत ऋतु–केसर, शिशिर ऋतु–हिना । उपासक को रूई इत्र में डुबाकर, प्रियालाल के श्री अंगों पर इत्र लगाना चाहिए। यदि छवि सेवा है तो भाव पूर्ति के लिए नाम-मात्र इत्र लगाकर, छवि के समीप ही इत्र युक्त रूई को रखना चाहिए। इत्र सेवा करने के पश्चात् स्वच्छ जल से अपने हस्त प्रक्षालित करना चाहिए।

चन्दन सेवा – उपासक श्रृंगार के समय प्रियाप्रीतम के श्रीअंगों पर पत्रावली की रचना हेतु पूर्व में ही ऋतु के अनुसार (यदि सर्दी का समय है तो थोड़ा केसर मिलाकर और यदि गर्मी का समय है तो कपूर मिलाकर) चन्दन

घिसकर रख लें। चन्दन को 'मृदु-मृदु' अर्थात् धीरे-धीरे घिसना चाहिए क्योंकि चन्दन को धीरे-धीरे घर्षण करने से महीन चन्दन प्राप्त होता है और महीन चन्दन से सुकुमारी प्रियाजू और लालजू की सुन्दर पत्रावली की रचना होती है। यदि बलपूर्वक और शीघ्रता में चन्दन घर्षण किया जाता है तो वह मोटा चन्दन होता है, जिससे पत्रावली की रचना ठीक नहीं होती है। इसलिये चन्दन को पहले से ही धीरे-धीरे घिसकर तैयार कर लेना चाहिए।

पुष्प सेवा – उपासक को सेवा में ऋतु के अनुकूल पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए। हिम ऋतु में, कपड़े से निर्मित पुष्प-मालाओंसे प्रियाप्रीतम का श्रृंगार करना चाहिए। शेष ऋतुओं में सुंदर पुष्प-मालाओंसे प्रियाप्रीतम का श्रृंगार करना चाहिए। सेवा में प्रयोग करने से पूर्व पुष्पों को स्वच्छ वस्त्र से धीरे-धीरे पोंछ लेना चाहिए, जिससे उनकी नमी निकल जाए।

श्रृंगार उपरान्त उपासक को अपने प्रियालाल के समक्ष चौकी पर दर्पण अवश्य रखना चाहिए और भावना करना चाहिए कि प्रियालाल उस सुन्दर दर्पण में परस्पर अद्भुत शोभा का दर्शन कर रहे हैं।)

इस तरह श्री हितसजनीजू छहों ऋतुओं के रंग-बिरंगे सुन्दर-सुन्दर पुष्पों का चयन करके श्री प्रियालाल का सुन्दर श्रृंगार करती हैं, वैजयंती माला धारण कराती हैं, उन सुन्दर पुष्पों के गुच्छों से अंग-प्रत्यंगों को सजाती हैं। सम्पूर्ण श्रृंगार होने के बाद प्रियाप्रीतम को सुन्दर सिंहासन पर विराजमान करके श्री हितसजनीजू एक विशाल दर्पण सामने लाती हैं और परस्पर प्रियाप्रीतम को उनकी शोभा का दर्शन कराती हैं। श्यामाश्याम परस्पर एक-दूसरे की रूप माधुरी का पान कर रहे हैं।

हँसि हँसि देति सखी कर दर्पन । सकल सुगन्ध करति तन अर्पन ॥
मुकुर सुकर लै भामिनि जोही । अपने रूप आपु ही मोही ॥
रीझि-रीझि पुनि पुनि जु निहारै । मुसकि मुसकि रहै दृष्टि न टारै ॥
प्रीतम हू दरसत ता मांही । इत उत जुग स्वरूप मित नाहीं ॥

तिरछी अँखियन पलकन झूलत । लखि हरि नागरि मन मन फूलत ॥
अगर धूप महकी जु महल में । वृन्दावन हितरूप टहल में ॥

श्यामाश्याम उस विशाल दर्पण में मंद-मंद मुस्कुराते हुए परस्पर अद्भुत शोभा का दर्शन करते हैं। कभी एक-दूसरे के नेत्रों में नेत्र डालकर एकटक ऐसे देखते हैं मानो एक दूसरे से बात कर रहे हों। परस्पर एक-दूसरे की सौन्दर्यता को दिखा रहे हैं। प्रियालाल दर्पण में परस्पर अपनी छवि को देखकर मुस्कुरा रहे हैं।

इतने में प्रियाप्रीतम की दृष्टि परस्पर धारण की हुई बेसर पर पड़ती है। परस्पर रूप मोहित युगल के मध्य निज बेसर के लालित्य पर रसमयी मधुर स्पर्धा छिड़ जाती है –

बेसर कौन की अति नीकी ।
होड़ परी लालन अरु ललना चौंप बढ़ी अति जीकी ॥
न्याय पर्‌यो ललिताजूके आगे कौन ललित कौन फीकी ।
दामोदर हित विलग न मानौं झुकन झुकी श्रीराधेजू की ॥

•••

धूप आरती

इस प्रकार प्रियाप्रीतम दर्पण में प्रतिबिंबित परस्पर रूपरस के पान में निमग्न हैं। श्री हितसजनीजू कुंज में सुंदर इत्र का छिड़काव करके अब सुन्दर अगर-धूप लेकर प्रियालाल की धूप आरती करने जा रही हैं। इस तरह सखियाँ श्रृंगार आरती से पहले अगर-धूप से प्रियाप्रीतम की आरती करती हैं।

(इस पद का गायन करते हुए उपासक को प्रियाप्रीतम की अगर, कर्पूर-युक्त धूप अथवा शुद्ध अगरबत्ती द्वारा आरती करनी चाहिए।)

आजु नीकी बनी राधिका नागरी ।
ब्रज जुवति जूथ में रूप अरु चतुरई,
शील सिंगार गुन सबन तैं आगरी ॥
कमल दक्षिण भुजा, वाम भुज अंस सखि,
गावति सरस मिलि मधुर स्वर राग री ।
सकल विद्या विदित रहसि हरिवंश हित,
मिलत नव कुंजवर श्याम बड़ भाग री ॥

•••

श्रृंगार भोग

धूप आरती के पश्चात् हितसजनीजू सखियों को श्रृंगार भोग लाने का संकेत करती हैं। फिर युगलसरकार से निवेदन करती हैं – "हे श्यामाजू! अब आप युगल मिलकर श्रृंगार भोग आरोगिए।" पर प्रियाप्रीतम एक-दूसरे की रूपमाधुरी का पान करते हुए दर्पण में उलझे हुए हैं –

दर्पण लखि मोद भरे पाक विविध भोग धरे,
रूप गर्व दोऊनि कै बदन झलकि आयौ ।
मुकुर कर न छोरत हैं आनन कौ मोरत हैं,
हित की मरमी सहेली मन कौ भेद पायौ ॥
दर्पण देहु मो जु हाथ जेंवौ मिलि दोऊ साथ,
जाने मैं छबि गरूर नैंननि दरसायौ ॥

हितसजनीजू फिर कहती हैं – "हे प्रियाजू ! सखियों ने अत्यन्त प्रेम से भरकर यह श्रृंगार भोग आपके सुख के लिए तैयार किया है। आप युगल परस्पर मिलकर भोग आरोगिए।" फिर भी वे दर्पण नहीं छोड़ते हैं। प्रियाजू की रूपमाधुरी में लालजू आसक्त हैं और लालजू की रूपमाधुरी में प्रियाजू

आसक्त हैं और प्रियाप्रीतम की ऐसी अद्भुत शोभा को निरखकर सखियाँ आसक्त हो रही हैं।

श्री हितसजनीजू लाड़िलीजू से फिर प्रार्थना करती हैं – "हे प्यारीजू! हे प्यारेजू! आपके वनविहार का समय हो रहा है शीघ्र भोग आरोगिए।" हितसजनीजूके प्रिय वचन सुनकर प्रियाप्रीतम भोग आरोगने लगते हैं।

(उपासक को सुन्दर चौकी को प्रक्षालित करके उस पर मिश्री, दही-मलाई, चन्द्रकला, घेवर आदि सुन्दर भोग-पदार्थ और अमनियाँ किये हुए बड़े ही रसीले फल और कई तरह के फलों के रस, विराजमान करना चाहिए। प्रियाप्रीतम को भोग अर्पण करने के पश्चात् उपासक को पर्दा लगाकर श्रृंगार भोग के इन पदों का गायन करना चाहिए ।)

सजनी कौ राख्यौ रुख ग्रास लैंन लागे मुख,
जो जो मन रुच्यो पाक बहुरि सो मँगायौ॥
कीनी मनुहारि धनी लाल रसिक चूड़ामनि,
प्यारी मन भाँवती सहेली जो चितायौ ।
अदलि बदलि ग्रास लेत सखियनि आनन्द देत,
चंद्रकला घेवर ने स्वाद अति बढ़ायौ ॥

....

जेंवत कुंजनि में पिय प्यारी ।
पिस्ता दाख चिरौंजी मेवा आनि धरी भरि थारी ॥
ठाढ़ी लियें सखी भरि भाजन विविध सौंज सुखकारी ।
देत कौर पिय श्याम मुदित मन, हँसि हँसि मुख सुकुँवारी ॥
अरस परस अति ही सुख उपजत, हँसि हँसि रहत निहारी ।
'अलिबेली' आनँद की निधि करत प्रान बलिहारी ॥

श्रीहितसजनीजू पहले प्रियाजू को पवाती हैं, प्रियाजू जब लालजू की तरफ देखती हैं तो लालजू भी इशारे से कहते हैं – "प्रियाजू! पहले आप

पाओ।" श्री हितसजनीजू प्रियाजू को पवाती हैं। लालजू के सुख के लिये सर्वप्रथम प्रियाजू पाती हैं। फिर लालजू अपने करकमल से प्रियाजू को पवा रहे हैं, प्रियाजू लालजू को पवा रही हैं; बड़ा हास्य-विनोद भी हो रहा है -

बतरस परे स्याम गौर कहत जात लाउ और,
तुष्टि पुष्टि होत कियौ भोजन मन भायौ ।
सिता मिल्यौ गाढ़ौ दही पीयौ पुनि ललक रही,
मेवा फल पाइ स्वाद अधिक सो जनायौ॥
सीतल अति मिष्ट जानि जमुनोदिक कियौ पानि,
वदन कर अँगौछि सखी पान रचि खवायौ ।
बलि बलि वृन्दावन हित रूप साजि आरती कौ,
पंच नाद होत सीस चँवर लै ढुरायौ ॥

जब हितसजनीजू ने देखा कि प्रियाप्रीतम भोग आरोग चुके हैं तो मृदु यमुना जल से उनको आचमन कराती हैं। सुन्दर कोमल वस्त्र से मुख पोंछकर सुन्दर पान की बीरी पवाती हैं ।

(उपासक को भोग लगाने के बाद एक पात्र में स्वच्छ जल से प्रियाप्रीतम को आचमन कराकर बहुत ही सुकोमल वस्त्र से उनका मुख पोंछना चाहिए; जिस चौकी पर भोग लगाया गया है, उसे जल के छीटों से प्रक्षालित कर अमनियाँ करना चाहिए ।)

•••

श्रृंगार आरती

श्रृंगार भोग आरोग कर (भोग पाकर) प्रियाप्रीतम सुंदर सिंहासन पर विराजमान हैं। श्री हितसजनीजू प्रियाप्रीतम की श्रृंगार आरती करती हैं। सखियाँ चँवर लेकर घंटानाद, गान एवं नृत्य सहित प्यारीजू और प्यारेजू की श्रृंगार आरती कर रही हैं ।

(उपासक को आरती की वर्णित सेवा सौंज के द्वारा प्रियाप्रीतम की श्रृंगार आरती इन पदों का गायन करते हुए करनी चाहिए ।)

बनी श्रीराधामोहन जू की जोरी ।

इन्द्रनीलमणि श्याम मनोहर, सात कुम्भ तनु गोरी ॥
भाल विशाल तिलक हरि, कामिनि चिकुर चंद्र बिच रोरी ।
गजनायक प्रभु चाल, गयन्दनि गति वृषभानु किसोरी ॥
नील निचोल जुवति, मोहन पट पीत अरुण सिर खोरी ।
(जैश्री) हित हरिवंश रसिक राधापति सुरत रंग में बोरी ॥

....

श्रीराधावल्लभ लाल की आरती ।

रतन जटित कंचन की मनिमय, हित सौं सहचरि वारती ॥
अंग अंग की आभा झलकत, अद्भुत रूप निहारती ।
'हित ध्रुव' सखी प्रेम की सीवाँ, कैसेहूँ पलक न टारती ॥

श्रीहितसजनीजू आरती कर रही हैं और कुछ सखियाँ नृत्य कर रही हैं, कुछ सखियाँ सुन्दर-सुन्दर वाद्य बजा रही हैं, कुछ गान कर रही हैं, कोई चँवर ढुला रही हैं । ये सब करते हुए भी समस्त सहचरियों के नेत्र प्रियालाल की अद्भुत शोभा के रसपान में निमग्न हैं ।

इस प्रकार श्रृंगार आरती सम्पन्न करके प्रियालाल के रूप रसार्णव में मीनवत् आसक्त समस्त सहचरियाँ उनकी श्रृंगार शोभा का निर्निमेष नेत्रों से पान कर रही हैं। श्री हितसजनीजू प्रियालाल के इस अनुपम रूप वैभव का रसास्वादन करती हुई अत्यन्त प्रेमोल्लास में सखियों के बीच युगल का यश गान करने लगती हैं –

बनी वृषभानु नन्दिनी आजु ।

भूषन बसन विविध पहिरे तन पिय मोहन हित साजु ॥
हाव भाव लावण्य भ्रकुटि लट हरत जुवतिजन पाजु ।

ताल भेद औघर सुर सूचत नूपुर किंकिनि बाजु ॥
नव निकुंज अभिराम श्याम सँग नीकौ बन्यौ समाजु ।
(जैश्री) हित हरिवंश बिलास रास जुत जोरी अविचल राजु ॥

श्रीहितसजनीजू द्वारा प्रियालाल की सुंदर शोभा का गान होने के पश्चात् श्रीध्रुवअलीजू भी प्रियालाल की नवनवायमान शोभा का गान करती हैं –

श्रीयुगल ध्यान

(श्री) प्रिया वदन छबि चंद मनौं, प्रीतम नैंन चकोर ।
प्रेमसुधा रस माधुरी, पान करत निसि भोर ॥
अंगनि की छबि कहा कहौं, मन में रहत विचार ।
भूषन भये भूषननि कौं, अति सरूप सुकुँवार ॥
सुरंग माँग मोतिनु सहित, सीस फूल सुख मूल ।
मोर चंद्रिका मोहिनी, देखत भूली भूल ॥
स्याम लाल बैंदी बनी, सोभा बढ़ी अपार ।
प्रगट विराजत शशिन पर, मानौं अनुराग सिंगार ॥
कुंडल कल ताटंक चल, रहे अधिक झलकाइ ।
मानौं छबि के शशि-भानु जुग, छबि कमलनि मिले आइ ॥
नासा बेसरि नथ बनी, सोहत चंचल नैंन ।
देखत भांति सुहावनी, मोहे कोटिक मैंन ॥
सुन्दर चिबुक कपोल मृदु, अधर सुरंग सुदेस ।
मुसिकनि बरसत फूल सुख, कहि न सकत छबि लेस ॥
अंगनि भूषन झलकि रहे, अरू अंजन रँग पान ।
नवसत सरवर ते मनौं, निकसे करि अस्नान ॥
कहि न सकत अंगनि-प्रभा, कुंज-भवन रह्यौ छाइ ।
मानौं बागे रूप के, पहिरे दुहुनि बनाइ ॥

रतनांगद पहुँची बनी, वलया वलय. सुढार ।
अँगुरिनु मुँदरीं फबि रही, अरु मिहँदी रँग-सार ॥
चंद्रहार मुक्तावली, राजति दुलरी पोति ।
पान पदिक उर जगमगै, प्रतिबिंबित अँग-जोति ॥
मनिमय किंकिनि-जाल छबि, कहौं जोइ सोइ थोर ।
मनौं रूप दीपावली, झलमलात चहूँ ओर ॥
जेहरि सुमिलि अनूप बनी, नूपुर अनवट चारि ।
और छाँड़िके या छबिहिं, हिय के नैंन निहारि ॥
बिछुवनि की छबि कहा कहौं, उपजत रव रुचि-दैंन ।
मनौं सावक कल हंस के, बोलत अति मृदु बैंन ॥
नख पल्लव सुठि सोहने, सोभा बढ़ी सुभाई ।
मानौं छबि चंद्रावली, कंज दलनि लगी आइ ॥
गौर वरन सांवल चरन, रचि मेहंदी के रंग ।
तिन तरुवनि तर लुठत रहें, रति-जुत कोटि अनंग ॥
अति सुकुमारी लाड़िली, पिय किसोर सुकुँवार ।
इक छत प्रेम छके रहैं, अद्भुत प्रेम बिहार ॥
अनुपम स्यामलगौर छबि, सदा बसौ मम चित्त ।
जैसे घन अरु दामिनी, एक संग रहे नित्त ॥
बरने दोहा अष्ट-दस, जुगल ध्यान रसखान ।
जौ चाहत विश्राम 'ध्रुव', यह छबि उर में आन ॥
पलकनि के जैसैं अधिक, पुतरिनु सौं अति प्यार ।
ऐसैहिं लाड़िलीलाल के, छिनु छिनु चरन संभार ॥

...

मध्यान्हकालीन वनविहार

श्री हित ध्रुवअलिजू के द्वारा प्रियालाल की श्रीअंगशोभा का वर्णन होने के बाद और भी हितसहचरियाँ प्रियालाल की श्रृंगारशोभा का वर्णन करती हैं। इतने में श्री हितसजनीजू प्रियाप्रीतम से निवेदन करती हैं – "हे युगलसरकार! आपके श्रृंगार के उपरान्त होने वाले मध्यान्हकालीन वनविहार का समय हो गया है, अब आप कृपा करके वनविहार के लिये पधारें।"

श्यामाश्याम गलबहियाँ दिए हुए श्री वृन्दावन के कुंज-निकुंजों की शोभा का अवलोकन करते हुए विहरण कर रहे हैं । प्रियाप्रीतम की प्राणप्यारी सहचरियों ने एक कुंज में पहले से ही बहुत सुन्दर शैया की रचना की है । श्यामाश्याम उस शैया पर विराजमान होते हैं । लालजू प्यारीजू से कुछ कहना चाहते हैं । लालजू के मन की यह बात जानकर प्यारीजू लालजू से कहती हैं – "प्रीतम! हमें ऐसा लग रहा है कि आप कुछ कहना चाहते हैं । क्या बात है?" तो प्यारेजू लाड़िलीजू से कहते हैं –

तब मेरे नैंन सिरात किसोरी जब तेरे नैंन निहारौं ।
कोटि काम रति, कोटिचंद वदनारविंद पर वारौं ॥
तब मुख सुख जब तेरे प्यारी पावन नाम उचारौं ।
हाथ सनाथ होत जब तेरे अंग सुमाँग सिंगारौं ॥
श्रवन रवन तबही जब तेरे गुनगन सुनत उरधारौं ।
तब रसना रसमय जब तेरे अधर सुधाहि न डारौं ॥
उरकौ जुरु जात न तब जब भुजनि बीच तैं टारौं ।
तब बुधि मन चित मेरौ हित जब रूप अनूप विचारौं ॥
तब मम मोर-मुकुट साँचौ जब सेजमहल रज झारौं ।
तब वंशी धुनि जगत प्रसंसी जब तव जस न बिसारौं ॥
तू भूषन धन जीवन मेरैं, यह ब्रत मन प्रतिपारौं ।
व्यासस्वामिनी के तन, मन पर राई लौंन उतारौं ॥

पुनः प्रियालाल गलबहियाँ दिए हुए आगे की निकुंजशोभा का दर्शन करते हुए चल रहे हैं। निकट ही एक बड़ी अद्भुत निकुंज है। इस निकुंज की सम्पूर्ण भूमि स्फटिक मणि जैसी है। विविध प्रकार के रत्नों से जटित वृन्दावन की भूमि ऐसी लग रही है मानों सम्पूर्ण भूमि पर कर्पूर पीसकर बिछा दिया गया हो । अद्भुत अनुराग रंग में रंगे हुए हमारे युगलसरकार इस कुंज के भीतर सुन्दर कुसुम शैया पर रसमयी क्रीड़ा में निमग्न हो जाते हैं –

आजु निकुंज मंजु में खेलत, नवल किशोर नवीन किशोरी ।
अति अनुपम अनुराग परस्पर, सुन अभूत भूतल पर जोरी ॥
विद्रुम फटिक विविध निर्मित धर, नव कर्पूर पराग न थोरी ।
कोमल किसलय सयन सुपेसल, तापर श्याम निवेसित गोरी ॥
मिथुन हास परिहास परायन, पीक कपोल कमल पर झोरी ।
गौरश्याम भुज कलह मनोहर, नीवी बंधन मोचत डोरी ॥
हरि उर मुकुर विलोकि अपनपौ, विभ्रम विकल मान जुत भोरी ।
चिबुक सुचारु प्रलोइ प्रबोधत, पिय प्रतिबिंब जनाय निहोरी ॥
नेति-नेति बचनामृत सुनि सुनि, ललितादिक देखत दुरि चोरी ।
(जैश्री) हित हरिवंश करत कर धूनन, प्रणयकोप मालावलि तोरी ॥

हमारे प्रियालाल ऐसी अद्भुत रसमयी लीला करके गलबहियाँ दिये हुए श्रीयमुनाजी के पावन पुलिन पर आ रहे हैं। श्री वृन्दावन के कुंज-निकुंजों और श्री यमुना जी के उज्ज्वल एवं विस्तृत पुलिन की अनुपम शोभा देखकर प्रियाप्रीतम के हृदय में रास रस के विलसन की अतिशय उमगन होने लगी। मंडलाकार सखियों के यूथ से परिवेष्टित प्रियाप्रीतम परम ललित रास रस का विस्तार कर रहे हैं –

आज बन नीकौ रास बनायौ ।
पुलिन पवित्र सुभग यमुनातट मोहन बेनु बजायौ ॥
कल कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि खगमृग सचु पायौ ।

जुवतिनु मण्डल मध्य श्यामघन सारँग राग जमायौ ॥
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ मिलि रसदसिन्धु बढ़ायौ ।
विविध विशद वृषभानु नन्दिनी अंग सुधंग दिखायौ ॥
अभिनय निपुन लटकि लट लोचन भृकुटि अनंग नचायौ ।
तत्ताथेई ताथेई धरत नूतन गति, पति ब्रजराज रिझायौ ॥
सकल उदार नृपति चूड़ामनि सुख वारिद बरसायौ ।
परिरम्भन चुंबन आलिंगन उचित जुवति जन पायौ ॥
बरसत कुसुम मुदित नभनायक इंद्र निशान बजायौ ।
(जैश्री) हित हरिवंश रसिक राधापति जस वितान जग छायौ ॥

श्री यमुनाजी के समीप ही बड़ी सुन्दर निकुंज है। मध्याह्न रास के पश्चात् सखियाँ हमारे युगलसरकार को उस निकुंज में सुन्दर सुकोमल आसन पर विराजमान करके अपने अंचल से पवन कर रही हैं, बड़ी अद्भुत शोभा हो रही है। प्रियाप्रीतम निकुंज की अनुपम शोभा का अवलोकन कर रहे हैं-

तरु श्रेनी अति शोभा बनी ॥

आसन कुसुम सखी मंडल मधि बैठे राजत धन धनी ॥
झूमि रहे फूलनि के झूमिका ललित बेलि लपटी घनी ।
रवि की किरन तहाँ नहिं दरसति त्रिबिध पवन बहै सुख सनी ॥
निकटहिं बहति कलिंद नंदिनी लहरिनु छाँड़ति आपनी ।
वृन्दावन हित रूप राग रुचि उपजी रंग बढ़ावनी ॥

•••

राजभोग समय

श्यामाश्याम वृन्दावन की अद्भुत शोभा में डूबे हुए हैं। श्री चम्पकलताजू ने श्री तुंगविद्याजू से प्रार्थना की – "हमारे श्री युगलवर के राजभोग का समय हो रहा है और श्री युगलसरकार वनविहार में हैं, आप जाइये और उनको निवेदन करके इस भोजन कुंज में ले आइये ।"

सजनी एक सन्देसो लाई ।

भोजन भवन चलौ बलि मोकों, चम्पकलता पठाई ॥
वन सम्पत्ति की करत प्रशंसा, चले बात मन भाई ।
सादर लियें सखी आगे ह्वै, जल झारी लै आइ ॥
कर पद ध्वाय मणिन चौकी, कुसुमासन सहित बिछाई ।
कटि पटिका मुँद्रिका उतारि, भोजन की जुक्ति बनाईं ॥
गौरस्याम बैठारि तहाँ, अति फूली अंग न माई ।
वृंदावन हितरूप अली, सामा परसन हुलसाई ॥

•••

राजभोग

श्री तुंगविद्याजू निवेदन करके श्यामाश्याम को भोजन कुंज में लाईं, फिर श्री चम्पकलताजू ने युगल के करकमल, चरणकमल प्रक्षालित करके सुकोमल वस्त्र से पोंछा। सुंदर पुष्पों से रचित सिंहासन जो सखियों ने पहले से ही सजाया हुआ है, उस पर प्रियाप्रीतम को विराजमान कराती हैं। सामने मणियों से जटित विशाल चौकी पर स्वर्णिम थाल में बहुत-सी सुन्दर-सुन्दर कटोरियों में स्वादिष्ट विविध भोग-सामग्री रखी गई है और सखियाँ विभिन्न पात्रों में और भी बहुत से व्यंजन लेकर पास में खड़ी हैं एवं प्रेम से भरी सखियाँ अत्यन्त वात्सल्य पूर्वक अपने हाथों से प्रियालाल को मनुहार करते हुए (आग्रह करते हुए) विविध व्यंजन पवा रही हैं । कभी लालजू प्रियाजू

को पवा रहे हैं तो कभी प्रियाजू लालजू को पवा रही हैं । बीच-बीच में सखियाँ हास्य-विनोद भी कर रही हैं। इस प्रकार प्रियाप्रीतम अत्यन्त रुचि पूर्वक भोग पा रहे हैं।

(उपासक को मध्यान्ह समय में प्रियाप्रीतम के समक्ष चौकी पर सुंदर थाल में रोटी, पूड़ी, कचौरी, कढ़ी चावल, कई तरह के शाक, तरकारी, दाल, चटनी, दही बरा, पापड़, खीर, विविध मिष्ठान, मेवा, फल आदि (अपनी रुचि और सामर्थ्य अनुसार) विविध व्यंजन एवं शीतल जल पधराना चाहिए । तत्पश्चात् सबसे पहला कौर प्रियाजू को फिर लाल जू को पवाना चाहिए। इसी क्रम से प्रियालाल को इस पद का भावना पूर्वक गायन करते हुए राजभोग पवाना चाहिए। फिर कुछ समय पश्चात् आचमन पात्र द्वारा प्रियालाल को आचमन कराना चाहिए और सुंदर कोमल वस्त्र से मुख पोंछकर पान-बीरी पवाना चाहिए ।)

मिलि जैंवत लाडिलीलाल दोऊ षट विंजन चारु सबै सरसैं ।
मनमें रसकी रुचि जो उपजें सखी माधुरी कुंज सबै बरसैं ॥
हठिकै मनमोहन हारि परे निज हाथ जिमावन को तरसैं ।
बीचहिं कर कंपित छूटि पर्‌यो कबहूँ मुख ग्रास लिये परसैं ॥
दृग सों दृग जोरि दोऊ मुसकाय भरे अनुराग सुधा बरसैं ।
मनुहार बिहार आहार करें तन में मन प्राण परे करसैं ॥
सखी सौंज लिये चहुँ ओर खरी हरषैं निरखैं दरसैं परसैं ।
सुख सिंधु अपार कह्यो न परै अवशेष सखी हरिवंश लसैं ॥

जब श्री हितसजनीजू ने देखा कि श्री प्रियाप्रीतम भोग आरोग चुके हैं, तो यमुनाजल से आचमन कराया एवं सुकोमल वस्त्र से मुख पोंछा। श्री ललिताजू ने मधुर रसमय पान की बीरी अर्पित की।

•••

राजभोग आरती

इस प्रकार राजभोग आरोग कर प्रियाप्रीतम सुंदर सिंहासन पर विराजमान हैं। सखियाँ राजभोग आरती तैयार करके लाती हैं । श्री हितसजनीजू समस्त सखियों के साथ प्रियाप्रीतम की राजभोग आरती कर रही हैं।

(उपासक को वर्णित सेवा सौंज के द्वारा राजभोग आरती, इन पदों का गायन करते हुए करनी चाहिए ।)

आरती मदन गोपाल की कीजियै ।
देव-ऋषि-व्यास-शुकदास सब कहत निजु, क्यौं न बिनु कष्ट रस-सिन्धु कौं पीजियैं ॥
अगर करि धूप कुमकुम मलय रंजित, नव वर्तिका घृत सौं पूरि राखौ ॥
कुसुम कृत माल नँदलाल के भाल पर, तिलक करि प्रगट यश क्यों न भाखौ ॥
भोग प्रभु योग भरि थार धरि कृष्ण पै, मुदित भुज-दण्ड वर चंवर ढारौ ॥
आचमन पान हित, मिलत कर्पूर-जल, सुभग मुख वास, कुल-ताप जारौ ॥
शंख दुन्दुभि पणव घंट कल वेणु रव, झल्लरी सहित स्वर सप्त नाँचौं ॥
मनुज-तन पाय यह दाय ब्रजराज भज, सुखद हरिवंश प्रभु क्यों न याँचौ ॥

....

राजभोग आरती उतारति हैं प्रेम छकीं,
सारँग अलापति सुर कोकिलै लजावैं ।
जुगल रूप भरी अवेस निर्तत इक गति सुदेस,
भरि-भरि पुहुपांजुलीनु हरषैं वरषावैं ॥
बाजेनु की मंजुल धुनि मुदित होत पंछी सुनि,
हितअलि-ललिता प्रवीन चौंर सिर ढुरावैं ।
बलि-बलि वृन्दावन हित रूप मंजरी बुलाइ,
गौर-श्याम निर्त रीझि माला पहिरावैं ॥

इस प्रकार श्री हितसजनीजू समस्त सखियों सहित अत्यन्त प्रेमोल्लास के साथ राजभोग आरती करती हैं। सखियों की प्रेम विवशता से रीझ कर युगलवर सभी को अपनी प्रसादी माला देकर सुख प्रदान कर रहे हैं ।

•••

मध्यान्ह शैया विहार

'युगलवर को श्रमित जान कर सखियाँ उनसे शयन कुंज में पधारने के लिए प्रार्थना करती हैं। सखियों की प्रेमभरी प्रार्थना सुनकर प्रियाप्रीतम शयन कुंज में पधारते हैं।

सखियों ने शयन कुंज में पहले से ही सुकोमल शैया की रचना की है। बहुत सुन्दर मणियों का प्रकाश हो रहा है। अत्यन्त सुगंधित इत्र का छिड़काव हुआ है, अतिशय मादक सौरभ आ रही है और शैया के पास में ही जल की झारी और वृन्दावन के रसभरे फलों का स्वादिष्ट रस सुन्दर-सुन्दर स्वर्णपात्रों में रखा हुआ है।

लाड़भरी प्यारीजू और प्यारेजू उस शैयापर विराजमान होते हैं। हितसजनीजू धीरे-धीरे उनके चरण चाँपती हैं। जब प्रियाप्रीतम शयन करने लगते हैं तो सब सखियाँ बाहर आ कर कुंजरन्ध्रों से प्रियालाल के लीला विलास का अवलोकन करने लगती हैं ।

ऐसा लग रहा है कि प्रियाप्रीतम शयन कर रहे हैं, पर ये युगलसरकार बड़े कौतुकी हैं। वैसे तो सखियों ने पहले से ही शैया की रचना की थी, पर सखियाँ देखती हैं कि नवल लाड़िलीजू और नवल लालजू अपने करकमल से पुनः कोमल-कोमल कमलों की पंखुड़ियाँ एवं पराग लेकर के शैया की रचना करके उस पर रसकेलि कर रहे हैं ।

(उपासक को कोमल वस्त्रों अथवा सुगन्धित पुष्पों के द्वारा सुंदर शैया की रचना करके उसके निकट एक पात्र में पान-बीरी तथा जल की झारी रखनी चाहिए। इसके बाद अपने प्रियालाल को उस शैय्या पर शयन कराकर प्रीति पूर्वक उनके चरण दबाते हुए इस पद का गान करना चाहिए।)

कियौ गवन सैंन भवन प्रानप्यारी प्रानरवन,
रचत चोंज रस मनोज पौढ़े सचु पाई।
मणिनु कौ प्रकाश जहाँ सौरभ उदगार तहाँ,
पान डबा झारी जल धरी तहाँ जाई॥
नेह भरी गुननि भरी दंपति-सुख लाड़ ढरी,
मृदुल करनि चाँपि चरन बाहर सखि आई।
बलि बलि वृन्दावन हित रूप जुगल रसिक भूप,
तिनकी रस-केलि हियें संपति सचि लाई॥

....

नवलनागरि, नवलनागर किशोर मिलि,
कुंज कोमल कमल दलन सिज्या रची ।
गौर साँवल अंग रुचिर तापर मिले,
सरस मनि नील मनों मृदुल कंचन खची ॥
सुरत नीवी निबंध हेतु प्रिय मानिनी,
प्रिया की भुजनि में कलह मोहन मची ।
सुभग श्रीफल उरज पानि परसत रोष,
हुँकार गर्व दृग भंगि भामिनी लची ॥
कोक कोटिक रभस रहसि (श्री) हरिवंश हित,
विविध कल माधुरी किमपि नाहिन बची ।
प्रणयमय रसिक ललितादि लोचन चषक,
पिवत मकरंद सुखरासि अंतर सची ॥

प्रियालाल मध्यान्ह में शैयाविहार करके शयन कर रहे हैं, सखियाँ कुंजरन्ध्रों से प्रियालाल की शयन शोभा का दर्शन कर रही हैं –

दोऊ पौढ़े हैं अरसाइ कैं।

अति सुकुमारि श्रमित कछु सजनी अंग अनंग लड़ाइकैं ॥
चाह सनेह सुरति हित सहचरि सेवा. अवसर पाइकैं ।
कोऊ बिजन टहल में प्रफुलित कोऊ पद चाँपत आइकैं ॥
कोऊ झमकि झरोखनि लागी भरि अति प्रेम सुभाइकैं ।
वृंदावन हितरूप जाउँ बलि रह्यौ रति रस सुख छाइकैं ॥

समस्त सहचरियाँ कुंजरन्ध्रोंसे प्रियालालकी महाप्रेममयी रसकेलि का पान अपने नेत्रों से कर रही हैं। आहा ! कुसुमशैयापर शयन करते हुए युगल सरकार की कैसी सुन्दर शोभा हो रही है। आलस्य से भरे हुए उनके नेत्र हैं। गौरश्याम ऐसे शयन कर रहे हैं मानो श्यामतमाल में कनक की बेलि उलझी हुई हो।

(उपासक को शयन की भावना करके शयन कुंज का पर्दा लगा देना चाहिए। इस प्रकार प्रातःकाल एवं मध्यान्ह की सेवा से निवृत्त होकर अपने परिजनों अन्य वैष्णवों एवं अतिथियों के सहित प्रियालाल का प्रसाद ग्रहण करना चाहिये।)

•••

उत्थापन समय

इस प्रकार रसकेलि में तृतीय प्रहर के बीतने पर श्री हितसजनी जू सखियों से कह रही हैं कि सखीयों! अब चौथे याम में प्रियाप्रीतम का उत्थापन किया जाये। उनको भोग लगाया जाये । देखो, बहुत समय हो गया है । इधर निकुँज में सब सहचरियाँ अपनी-अपनी टहल में लगी हुई हैं। कोई सुन्दर-सुन्दर पुष्प चयन करके ला रही हैं, कोई मृदु-मृदु चंदन घर्षण कर रही हैं, कोई स्वादिष्ट फल ला रही हैं, कोई सुन्दर आभूषण सजा रही हैं। इस प्रकार सखियाँ समस्त सेवा सौंज को व्यवस्थित करने में संलग्न हैं ।

अब श्रीललिताजू ने श्रीहितसजनीजू से निवेदन किया कि आप निज शयन गृह में पधारकर प्रियालाल को जगाएँ। श्रीहितसजनीजू श्रीलाड़िलीजू के अद्भुत प्रसादी वस्त्र, आभूषण आदि धारण करके महल के अन्दर जाकर जहाँ प्रियालाल सुन्दर कुसुम शैया पर शयन किये हुए हैं, उन्हें जगा रही हैं। श्रीललिताजू शयन कुंज में अद्भुत रीति से मधुर वीणावादन कर रही हैं। श्री हितसजनीजू शैय्या के समीप जाकर युगल सरकार के चरणों को धीरे-धीरे सहला रही हैं। इस प्रकार प्रेम भरे वीणा वादन एवं सुकोमल स्पर्श से प्रियालाल नेत्रों को धीरे-धीरे खोलते हुए जग जाते हैं और परस्पर रसभरी बातों में निमग्न हो जाते हैं । सखियाँ निवेदन करके युगल सरकार को सुंदर चौकी पर विराजमान करके उनको यमुना जल से आचमन कराकर, मुख प्रक्षालन करती हैं।

(उपासक दिन के चौथे प्रहर में अपने प्रियालाल का उत्थापन करने हेतु, प्रियालाल के शयनकुंज में पहुँचकर, इस पद का गायन करते हुए कुंज के परदे को धीरे से खोले और प्रियालाल को ऋतु अनुसार जल पिलाए। फिर बहुत ही सुकोमल एवं स्वच्छ वस्त्र से उनका मुख पोंछे।)

जाहि री तू मन्दिर माँहि दरेरी ।

जुगल जगाई रह्यो दिन थोरौ, मानि वीनती मेरी॥
दंपति-अंग-सिंगारनि-सामा, मैं सचि धरी घनेरी।
गौर-स्याम को मुख देखें बिनु, सबै अरवरत एरी॥
यह सुनि सखी अलंकृत है कै, सैंन भवन गई नेरी।
वीन अंक लै गावत बलि-बलि, उठहु नींद दै डेरी॥
वन-कौतिक लोभी सुनि जागे, बातनि रंग ढरे री।
वृन्दावन हित रूप आइ जल, मज्जन वदन करे री॥

•••

उत्थापन श्रृंगार शोभा

सखियाँ युगलसरकार का मुख मज्जन कराकर सुन्दर श्रृंगार करती हैं। श्री हित सजनी जू ने समस्त सहचरियों के साथ श्री श्यामा-श्याम का अद्भुत श्रृंगार किया है । श्रीलालजू के श्रीअंग से सुन्दरता और लावण्य की मानो तरंगें प्रगट हो रही हैं ।

(उपासक को इस पद का गायन करते हुए प्रियालाल का श्रृंगार करना चाहिए।)

रुचिर राजत वधू कानन किशोरी ॥

सरस षोडस किए तिलक मृगमद दिये, मृगज लोचन उबटि अंग शिर खोरी॥
गंड पंडीर मंडित, चिकुर चंद्रिका, मेदिनी कवरि गूँथित सुरँग डोरी ।
श्रवन ताटंक कै चिबुक पर बिंदु दै, कसूँभि कंचुकि दुरे उरज फल कोरी ॥
वलय कंकन दोत, नखन जावक जोत, उदर गुन रेख, पट नील, कटि थोरी ।
सुभग जघनस्थली, कुनित किंकिनि भली, कोक संगीत रस–सिंधु झकझोरी ॥
विविध लीला रचित रहसि श्रीहरिवंश हित, रसिक सिर मौर राधारवन जोरी।
भृकुटि निर्जित मदन मंद सस्मित वदन,किये रस विवश घनश्याम पिय गोरी॥

श्रृंगारित प्रियालाल की कैसी अद्भुत शोभा हो रही है ।

देखौ मोहन मूरति रंग की ।
वाम भाग बृषभानु नंदिनी बढ़ी अमित छबि संग की ॥
सौभग लहरी स्याम सागर तन उठति है गोरे अंग की ।
वृन्दावन हित रूप छके पिय आनन तमक अनंग की ॥

....

बनी अति छबि जुगलकिसोर की ।
एक वैस गुन रूप अवधि दोऊ छिन नहिं बिछुरन जोर की ॥
देखेंई बनै कहत नहिं आवै लीला कुंजनि ओर की ।
वृन्दावन हित रूप जाउँ बलि प्रीतम नेह निहोर की ॥

•••

उत्थापन भोग

प्रियाप्रीतम का अद्भुत श्रृंगार करके सखियों ने उनके सामने सुन्दर चौकी पर पहले से अमनियाँ किए हुए उत्थापन भोग को पधराया। श्री हितसजनी जू अपने कर कमल से पहले प्रिया जू को पवाकर फिर लाल जू को पवा रही हैं। प्रियालाल उत्थापन भोग आरोग रहे हैं, लालजू प्रियाजू को पवा रहे हैं और प्रियाजू लालजू को पवा रही हैं । सहचरियाँ हास्य विनोद करते हुए बार-बार कह रही हैं "प्रियाजू ! ये पा लीजिये, लालजू ! ये पा लीजिये" ।

(उपासक को इस पद का गायन करते हुए फल (ऋतु अनुसार), मेवा, घृतपक भोग, मिष्ठान, स्वादिष्ट पेय पदार्थ आदि रुचि और सामर्थ्य के अनुसार प्रियाप्रीतम को उत्थापन भोग लगाना चाहिए।)

घृत पक मधुर पगी रस मेवा दंपति कौं अलि हरषि जिमावैं ।
ग्रास लेत अनुरागी दोऊ राग पूरबी सुमुखी गावैं ॥

चुनि लाईं बन तें जु मधुर फल स्वाद सराहत तिनकौं पावैं ।
द्वै तन मन जु एक ही दरसत वे इन मुख ये उन मुख लावैं ॥
नेह निहोरि निहोरि रंगीलौ कौर लेत आनंद बढ़ावैं ।
भोजन करैं करैं रस बतियाँ दोऊनि के मन कौं जो भावैं ॥
एला सिता मिल्यौ सीतल जल सरबत बानि सहेली प्यावैं ।
तुष्टि पुष्टि ह्वै अँचवन लीयौ रचि बीरी अलि सुहथ खवावैं ॥
रुख लै कैं हित सजनी ता छिन बन बिहार की सुधि जु करावैं ।
वृन्दावन हित रूप बारनैं लेति सबै करजनि चटकावैं ॥

श्रीहितसजनी जू ने जब देखा की युगल सरकार भोग आरोग चुके हैं तो यमुना जल से आचमन कराया और कोमल वस्त्र से मुख पोंछा। श्री ललिता जू ने युगल सरकार को पान की बीरी पवाई । प्रियाजू के अधर वैसे ही अरुण वर्ण के हैं, पर जब उन पर पान की लाली चढ़ी तो उनकी सुन्दरता और अधिक हो गई।

•••

धूप आरती

प्रियालाल को उत्थापन भोग पवाकर श्रीहितसजनीजू प्रियाप्रीतम की उत्थापन धूप आरती कर रही हैं।

(अब उपासक को प्रियालाल की अगर, धूप, कर्पूर अथवा शुद्ध अगरबत्ती द्वारा इस पद का गायन करते हुए उत्थापन धूप आरती करनी चाहिए।)

श्रीराधा मेरे प्रानन हूँ ते प्यारी ।
भूलि हूँ मान न कीजै सुन्दरि हौं तौ शरण तिहारी ॥
नेक चितै हँसि हेरिये मोतन खोलिये घूंघट सारी ।
जैश्री कृष्णदास हित प्रीति रीति बस भरलई अंकन वारी ॥

इस प्रकार समस्त सखियों सहित श्री हितसजनीजू प्रियालाल की धूप आरती करके उनकी अद्भुत शोभा का पान अपने अतृप्त लोचनों से करती हुई उनका यश गान कर रही हैं।

संध्या श्रृंगार शोभा

(उपासक को इन पदों की भावना करते हुए गायन करना चाहिए।)

देखौ माई, सुन्दरता की सीवाँ ।

ब्रज नवतरुनि कदंब नागरी, निरखि करत अधग्रीवाँ ॥
जो कोऊ कोटि कलप लगि जीवै, रसना कोटिक पावै ।
तऊ रुचिर वदनारविंद की, शोभा कहत न आवै ॥
देवलोक, भू-लोक, रसातल, सुनि कवि-कुल मति डरिये ।
सहज माधुरी अंग-अंग की, कहि कासौं पटतरिये ॥
(जैश्री) हित हरिवंश प्रताप, रूप, गुण, वय, बल श्याम उजागर ।
जाकी भ्रू-विलास बस पशुरिव, दिन विथकित रस सागर ॥

श्री हितसजनी जू कहती हैं – हे सखियों ! देखो हमारी स्वामिनीजू सुन्दरता की सींवा हैं, यदि कोई करोड़ों कल्प तक जीवे और करोड़ों जिह्वाएँ पा जाए तो भी वह हमारी स्वामिनी जू के सौन्दर्य का वर्णन नहीं कर सकता है और ऐसा नहीं है कि ये केवल सुन्दर हैं या अबला हैं, ये महान बल की राशि भी हैं –

देखौ माई अबला कै बलरासि ।

अति गज मत्त निरंकुश मोहन निरखि बँधे लट-पासि ॥
अब ही पंगु भई मन की गति बिनु उद्दिम अनियास ।
तब की कहा कहौं जब पिय प्रति चाहत भृकुटि विलास ॥
कच संजमन ब्याज भुज दरसत मुसिकन वदन विकास ।
हा-हरिवंश, अनीत रीत हित कत डारत तन त्रास ॥

संध्याकालीन वनविहार

श्री हित सजनी जू श्री स्वामिनी जू के अद्भुत प्रेम बल का वर्णन कर रही हैं । इतने में एक सखी आकर के निवेदन करती है, "हे लाड़िलीलाल जू ! आपके वनविहार का समय हो गया है । आप इस संध्या समय श्री वृंदावन की अनुपम शोभा का अवलोकन करें। श्रीवृन्दावन अद्भुत-अद्भुत शोभा प्रकाशित करके, आपको सुख देने के लिए विकल है। यहाँ के खग-मृग, पशु-पंछी सब आपके वन विहार की शोभा का दर्शन करना चाहते हैं। कृपया आप वन विहार के लिए पधारें।"

(उपासक को इन पदों की भावना करते हुए गायन करना चाहिए ।)

बन बिहरन की बार भई है ।
चलिये ललित लड़ैती मोहन कानन बानिक आजु नई है॥
भले जू भले यों कहत रसिक पिय, नागरि हूँ हँसि मान लई है ।
वृन्द-वृन्द झूमि-झूमि आईं हैं सहेली, सब कौतिक उमाहै भई प्रेममई है॥
हरषि उठी अपनी तरु सम्पति जिहिं पथ प्यारी जू दृष्टि गई है ।१।

इस प्रकार सखी के प्रेमपूर्ण निवेदन करने पर युगल सरकार ने प्रसन्न होकर स्वीकृति दे दी । गलबहियाँ दिए हुए प्रियाप्रीतम श्रीवृन्दावन की कुञ्ज-निकुंजों की शोभा का दर्शन करने के लिए पधार रहे हैं । कुछ सहचरियाँ सुन्दर पुष्पों के पाँवड़े डाल रही हैं, कोई छत्र लिए हुए हैं, कोई चँवर लिए हुए हैं। असंख्यों सहचरियाँ प्रियालाल के आस-पास चल रही हैं । एक अद्भुत कुञ्ज है, जिसके प्रत्येक पत्र-पुष्प में केवल श्री प्रियाजू का ही प्रतिबिम्ब पड़ रहा है । इस कुञ्ज में बड़ी अद्भुत लीला हुई –

बन की लीला लालहि भावै ।
पत्र प्रसून बीच प्रतिबिंबहिं नख–सिख प्रिया जनावै ॥
सकुच न सकत प्रगट परिरम्भन अलि लम्पट दुरि धावै ।

संभ्रम देत कुलक कल कामिनि रति-रण-कलह मचावै ॥
उलटी सबै समुझि नैंनन में अंजन रेख बनावै ।
(जैश्री) हित हरिवंश प्रीति रीति बस सजनी श्याम कहावै ॥

इस कुञ्ज में अद्भुत कौतूहल भरी लीला करते हुए प्यारीजू और प्यारेजू सखियों को सुख देते हुए आगे की कुञ्ज में बढ़े तो श्रीप्रियाप्रीतम को सुख पहुँचाने के लिए इस कुञ्ज में वर्षा ऋतु की शोभा प्रगट हो गयी।

नयौ नेह, नव रंग, नयौ रस, नवल श्याम वृषभानु किशोरी ।
नव पीताम्बर, नवल चूनरी, नई-नई बूँदन भीजत गोरी ॥
नव वृन्दावन हरित मनोहर नव चातक बोलत मोर–मोरी ।
नव मुरली जु मलार नई गति स्रवन सुनत आये घनघोरी ॥
नव भूषन नव मुकुट बिराजत नई-नई उरप लेत थोरी थोरी ।
(जैश्री) हित हरिवंश असीस देत मुख चिरजीवौ भूतल यह जोरी ॥

आहा! कैसी शोभा है – हमारी प्रिया जू नई, हमारे प्यारे जू नये । उनकी पोशाक नई, वृन्दावन नया, खग-मृग, पशु-पंछी नये, मेघ नये, नई-नई बूँदों से प्रियाप्रीतम भींज रहे हैं ।

नन्ही-नन्ही बूंदों की वर्षा हो रही है। इस सुखद वर्षा में भींजे हुए प्रियाप्रीतम के श्रीअंगों से ऐसी मोहक शोभा प्रकट हो रही है कि सभी सखियों के मन-प्राण का हरण हो रहा है। युगल सरकार परस्पर प्रेमरसमयी बातों में भूले हुए हैं, इनको अपनी सुधि ही नहीं है –

दोऊ जन भींजत अटके बातन।
सघन कुंज के द्वारे ठाढे, अम्बर लपटे गातन॥
ललिता ललित रूप-रस भीजीं, बूँद बचावत पातन।
(जैश्री) हित हरिवंश परस्पर प्रीतम, मिलवत रति रस घातन॥

प्रियाप्रीतम की ऐसी शोभा निहारकर समस्त सखियाँ अपने प्राण न्यौछावर करती हैं । प्रेम विवश समस्त सखियों के साथ श्री हितसजनीजू प्रियाप्रीतम को आशीष दे रही हैं –

हौं बलिजाँऊ नागरी श्याम ।

ऐसे ही रंग करौ निशिवासर, वृन्दाविपिन कुटी अभिराम ॥
हास विलास सुरत रस सींचन, पशुपति–दग्ध जिवावत काम ।
(जैश्री) हित हरिवंश लोल लोचन अलि, करहु न सफल सकल सुखधाम॥

वन विहार के समय प्रियाप्रीतम की इस प्रकार रसमयी क्रीड़ा को देखकर श्री हितसजनीजू के हृदय में प्रेम का अद्भुत उल्लास प्रकट हो रहा है। श्रीहितसजनीजू के हृदय की बात जानने वाले श्रीवृन्दावनदास चाचाजी श्रीप्यारीजू से कह रहे हैं –

सभागिनि तैं ऐसौ पिय पायौ ।

जाकी भृकुटी नचनि तनक सी मनसिज सैंन नचायौ॥
नख सिख रूप निरखि मोहन कौ खग मृग सुधि बिसरायौ ।
नटवर बपु कमनीय स्याम सो तेंरे रूप बिकायौ ॥
रहतु अधीन कमल दल लोचन रुचि लै बैनु बजायौ ।
परम प्रीति सौं तामें भामिनि राधा राधा गायौ ॥
जित जित चलति छबीली तू मग तित तित डोलतु धायौ ।
ऐसे रसिक नवल नागर सौं तुम चित न्याय लगायौ ॥
रस मूरति नेह की सींवा प्रेम लरजि ऊर आयौ ।
वृन्दावन हित रूप बलि गई तो मिलि भाग्य मनायौ ॥

प्रियाप्रीतम की परस्पर अद्भुत प्रीति का वर्णन करते हुए, श्री वृंदावनदास चाचाजी अपने सहचरी वपु से प्यारीजू से कहते हैं – "हे प्यारीजू! आपने ऐसे प्रीतम पाए हैं जिनकी भृकुटि त्रिभुवन विजयी काम को

भी विवश कर देती हैं । समस्त जड़-चेतन जिनके रूप पर आसक्त हैं, ऐसी महिमा वाले लालजू, आपके रूप पर बिके हुए हैं। यह अखिललोक चूड़ामणि लालजू अपने अनन्त ऐश्वर्य का विस्मरण करके अपने को अत्यन्त दीन मानते हुए सदा आपके अधीन रहते हैं। वंशी में सदैव आपके नाम-यश का गान करते रहते हैं। आपके रुख के आधीन ऐसे रसिक नवलनागर से आपने जो प्रीति की है, सो उचित ही है। यही आपके सहज स्वभाव के अनुकूल है। आप दोनों ही रसमूर्ति प्रेम की सींवा हैं।" सखी के मुख से लालजू की आसक्ति का ऐसा मार्मिक वर्णन सुनकर प्यारीजू के हृदय में अपार प्रेम उमड़ आया और उन्होंने अपने प्रीतम को हृदय से लगा लिया।

•••

संध्या भोग

प्यारीजू और प्यारेजू निकुंज महल में सुंदर सिंहासन पर विराजमान हैं। श्रीहितसजनीजू संध्याभोग का समय जानकर मनोरम स्वर्णिम चौकी पर सुंदर थाल में विविध भोग सामग्री पधराकर अपने करकमल से प्रथम ग्रास प्रियाजू को, फिर लालजू को पवाती हैं। लालजू भी अपने करकमल से पहले प्रियाजू को पवाते हैं फिर प्यारीजू लालजू को पवाती हैं । युगलसरकार परस्पर बहुत प्रकार के पकवान और फिर मीठे फल आरोग रहे हैं।

(संध्या समय में उपासक को एक चौकी पर मेवा, पकवान, मीठे फल (ॠतु अनुसार), मिष्ठान आदि भोग पदार्थ (भाव और सामर्थ्य के अनुसार) पधराकर इन पदों का गायन करते हुए संध्या भोग लगाना चाहिए।)

आय विराजे महल में, संध्या समयौ जानि ।
आली ल्याई भोग सब, मेवा अरु पकवान ॥

संध्या भोग अली लै आईं ।

पेड़ा-खुरमा और जलेबी, लडुआ-खजला और इमरती मोदक मगद मलाई॥

कंचन-थार धरे भरि आगैं, पिस्ता अरु बादाम रलाई ।

खात-खवावत लेत परस्पर, हँसनि दसन–चमकनि अधिकाई ॥

अद्भुत मीठे मधुर फल, ल्याईं सखी बनाइ ।

ख्वावत प्यारे लाल कौं, पहिलैं प्रियहिं पवाइ ॥

पानि परस मुख देत बीरी पिय, तब प्यारी नैंननि में मुसिकाईं ।

ललितादिक सखि 'कमलनयन हित', धनि दिन मानत आपुनौं माई ॥

श्री हितसजनीजू ने जब देखा कि प्रियालाल भोग आरोग चुके हैं तो यमुना जल से आचमन कराकर मुख पोंछा और सुन्दर पान की बीरी पवायी। प्यारीजू पान की बीरी पाके मंद-मंद मुस्कुरा रही हैं।

(इस प्रकार उपासक को प्रियालाल को संध्या भोग पवाने के पश्चात् यमुना जल से तीन बार आचमन कराकर, सुंदर सुकोमल स्वच्छ वस्त्र से मुख पोंछना चाहिए, तत्पश्चात् पान की बीरी पवाना चाहिए।)

•••

संध्या आरती

इस प्रकार प्रियालाल संध्या भोग पाकर सुंदर सिंहासन पर विराजमान हैं। सखियाँ संध्या आरती तैयार करके लाईं। श्रीहितसजनीजू समस्त सखियों के साथ भाव में भरकर प्रियालाल की संध्या आरती करती हैं ।

(संध्या समय में उपासक को आरती की वर्णित सेवा सौंज के द्वारा प्रियालाल की संध्या आरती इन पदों का गायन करते हुए करना चाहिए।)

पाग बनी पटुका बन्यौ, बन्यौ लाल कौ भेष ।
श्रीराधाबल्लभलाल की, दौरि आरती देख ॥

आरति कीजै श्यामसुन्दर की । नन्द के नन्दन राधिकावर की ॥
भक्ति करि दीप प्रेम कर बाती । साधु संगति करि अनुदिन राती ॥
आरति ब्रज युवति यूथ मन भावै । श्यामलीला श्रीहरिवंश हित गावै ॥
आरति राधावल्लभलालजू की कीजै । निरखि नयन छबि लाहौ लीजै ॥
सखि चहुँओर चँवर कर लीयैं । अनुरागन सौं भीने हीयैं ॥
सनमुख बीन मृदंग बजावैं । सहचरि नाना राग सुनावैं ॥
आरति राधावल्लभलालजू की कीजै । निरखि नयन छवि लाहौ लीजै ॥
कंचन-थार जटित मणि सोहै । मध्य वर्तिका त्रिभुवन मोहै ॥
घंटा-नाद कह्यौ नहिं जाई । आनँद मंगल की निधि माई ॥
जयति-जयति यह जोरी सुखरासी । जयश्रीरूपलाल हित चरन निवासी ॥
आरति राधावल्लभलालजू की कीजै । निरखि नयन छबि लाहौ लीजै ॥

सखियाँ भाव में भरकर प्रियालाल की संध्या आरती कर रही हैं। कुछ सखियाँ चँवर-मोरछल ढुला रही हैं, कुछ रसमय आलाप ले रही हैं, कुछ वाद्य बजा रही हैं, कुछ नृत्य कर रही हैं, कुछ पुष्पांजलि समर्पित कर रही हैं तथा कुछ सखियाँ बीच-बीच में प्रियालाल की जय ध्वनि कर रही हैं। इस प्रकार अत्यन्त प्रेमोल्लास के साथ समस्त सखियों ने प्रियालाल की संध्या आरती सम्पन्न की।

(आरती के पश्चात् दीपक को मन्दिर से कुछ दूरी पर विराजमान करना चाहिए । फिर प्रियाप्रीतम पर वारे हुए जल को निज जनों के ऊपर छिड़कना चाहिए । इसके पश्चात् चौकी को जल के छींटों से पोंछकर स्वच्छ करना चाहिए एवं निम्नलिखित स्तुति का गायन करना चाहिए ।)

इष्ट स्तुति

चन्द्र मिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुन विस्तार ।
दृढ़ व्रत श्रीहरिवंश कौ, मिटै न नित्य विहार ॥
जोरी जुगल किशोर की, और रची विधि बादि ।
दृढ़ व्रत श्रीहरिवंश कौ, निबह्यौ आदि युगादि ॥
निगम ब्रह्म परसत नहीं, जो रस सबतैं दूरि ।
कियौ प्रगट हरिवंश जू, रसिकन जीवन मूरि ॥
रूप बेलि प्यारी बनी, (सु) प्रीतम प्रेम तमाल ।
दोउ मन मिलि एकै भये, श्रीराधावल्लभलाल ॥
निकसि कुंज ठाड़े भये, भुजा परस्पर अंश ।
श्रीराधावल्लभ-मुख-कमल, निरखि नयन हरिवंश ॥
रे मन! श्रीहरिवंश भजि, जो चाहत विश्राम ।
जिहिं रस-बस ब्रज सुन्दरिनु, छाँड़ि दिये सुख धाम ॥
निगम नीर मिलि इक भयौ, भजन दुग्ध सम स्वेत ।
हरिवंश हंस न्यारौ कियौ, प्रगट जगत के हेत ॥
श्रीराधावल्लभ लाड़िली, अति उदार सुकुमारि।
ध्रुव तौ भूल्यौ ओर ते, तुम जिन देहु बिसारि ॥
तुम जिन देहु बिसारि, ठौर मोकौं कहुँ नाहीं ।
पिय रंग भरी कटाक्ष, नैंकु चितवहु मो माँहीं ॥
बढ़ै प्रीति की रीति, बीच कछु होय न बाधा ।
तुम हौ परम प्रवीन, प्राणवल्लभ श्रीराधा ॥
बिसरिहौं न बिसारिहौ, यही दान मोहिं देहु ।
श्रीहरिवंश के लाड़िले, मोहिं अपनी करि लेहु ॥
कैसैंहु पापी क्यौं न होइ, श्रीहरिवंश नाम जो लेइ ।
अलक लड़ैती रीझिकैं, महल खवासी देइ ॥

महिमा तेरी कहा कहूँ, श्रीहरिवंश दयाल ।
तेरे द्वारैं बँटत हैं, सहज लाड़िली-लाल ॥
सब अधमन कौ भूप हौं, नाहिन कछु समुझन्त ।
अधम उधारन व्यास सुत, यह सुनिकैं हर्षन्त ॥
बन्दौं श्रीहरिवंश के, चरन-कमल सुख-धाम ।
जिनकौं वन्दत नित्य ही, छैल छबीलौ श्याम ॥
श्रीहरिवंश स्वरूप कौं, मन वच करौं प्रणाम ।
सदा सनातन पाइये, श्रीवृन्दावन धाम ॥
जोरी श्रीहरिवंश की, श्रीहरिवंश स्वरूप ।
सेवकवाणी कुंज में, विहरत परम अनूप ॥
करुणानिधि अरु कृपानिधि, श्रीहरिवंश उदार ।
वृन्दावन रस कहन कौं, प्रगट धर्यौ अवतार ॥
हित की यहाँ उपासना, हित के हैं हम दास ।
हित विशेष राखत रहौं, चित नित हित की आस ॥
हरिवंशी हरि-अधर चढ़ि, गुंजत सदा अमन्द ।
दृग चकोर प्यासे सदा, प्याय सुधा मकरन्द ॥
श्रीहरिवंशहि गाय मन, भावै जस हरिवंश ।
हरिवंश बिना न निकासिहौं, पद निवास हरिवंश ॥

दीजौ श्रीवृन्दावन वास, निरखूँ श्रीराधावल्लभलाल कौं,
लड़ैती-लाल कौं ॥
यह जोरी मेरे जीवन प्राण, निरखूँ श्रीराधावल्लभलाल कौं,
लड़ैती-लाल कौं ॥
मोर मुकुट पीताम्बर, एजी पीताम्बर, उर बैजन्ती माल,
हाँजी सोहै गल फूलनि की माल ॥ निरखूँ. ॥ लड़ैती. ॥
जमुना पुलिन वंशीवट, एजी वंशीवट, सेवाकुञ्ज निज धाम,
हाँजी मंडल सेवा सुख धाम, हाँजी मानसरोवर बादग्राम ॥ निरखूँ. ॥ लड़ैती. ॥

वंशी बजावै प्यारौ मोहना, बजावै प्यारौ मोहना,
लै-लै राधा-राधा नाम, हाँजी लै-लै श्यामा-श्यामा नाम,
हाँजी लै-लै प्यारी-प्यारी नाम ॥ निरखूँ. ॥ लड़ैती. ॥

देखौ या ब्रज की रचना, श्रीवृन्दावन की रचना,
नाचैं जुगलकिशोर, हाँजी नाचैं नवलकिशोर ॥

निरखूँ. ॥ लड़ैती. ॥

चन्द्रसखी कौ प्यारौ, श्रीराधाजू कौ प्यारौ, सखियन कौ प्यारौ,
बिरज रखबारौ, श्रीहरिवंश दुलारौ ।
दरसन दीजौ दीनानाथ, हाँजी दर्शन दीजौ हित लाल ॥

निरखूँ. ॥ लड़ैती. ॥

यह जोरी मेरे जीवन प्रान, निरखूँ श्रीराधावल्लभलाल कौं,
लड़ैती-लाल कौं, दीजौ श्रीवृन्दावन वास ॥

निरखूँ. ॥ लड़ैती. ॥

...

गौरी राग का गान

संध्या आरती के पश्चात् प्रियालाल सुंदर सिंहासन पर विराजमान हैं। प्यारीजू के अनुपम रूप माधुर्य पर लालजू सहित समस्त सखियाँ अत्यन्त आसक्त हो रही हैं। लालजू और सखियों के हृदय में प्यारीजू के अद्भुत गौरी-गान के श्रवण की लालसा जाग्रत हुई। सभी अभिलाषा भरे नेत्रों से प्यारीजू की ओर निहार रहे हैं। सबके मनोभावों को समझकर लालजू को सुख प्रदान करने के लिए प्यारीजू गौरी-गान की स्वीकृति देती हैं। श्रीहितसजनीजू प्यारीजू की मधुमती नामक प्रिय वीणा उन्हें देती हैं। प्यारीजू अपूर्व रीति से गौरी गान कर रही हैं। लालजू प्यारीजू पर अपने मन-प्राण न्यौछावर कर रहे

हैं। प्यारी जू का रूप, उनकी अमृतमय वाणी, उनकी चितवन, यही लालजू का आहार है। सखियाँ युगल की ऐसी प्रीति रीति पर बलिहारी जा रही हैं।

(उपासक को इन पदों का गायन करते हुए इस लीला की भावना करनी चाहिए।)

गौरी के ललक सुर लेति हैं लड़ैती बेसरि की ढुलनि की सोभा री कहा कहौं।
बीन पै फिरति मूँगे फरी सी अँगुरियाँ तिनकी चपलता कौं उपमा न हौं लहौं॥
हलत तरौना कपोल प्रतिबिम्बित कौतिक अपूरब सौ नयो दृग हौं चहौं ।
वृन्दावन हित रूप बलि गई पिय सुख भोजन में भींजि भींजि हौं रहौं ॥

....

वृषभानुनन्दिनी मधुर कल गावै ।
विकट औघर तान चर्चरी ताल सौं, नन्दनन्दन मनसि मोद उपजावै ॥
प्रथम मज्जन चारु चीर कज्जल तिलक, श्रवन कुंडल, वदन चन्द्रन लजावै।
सुभग नक बेसरी, रतन हाटक जरी, अधर बंधूक, दसन कुंद चमकावै ॥
वलय कंकन चारु, उरसि राजत हारु, कटिव किंकिनि चरन नूपुर बजावै ।
हंस कल गामिनी, मथत मद कामिनी, नखन मदयंतिका रंग रुचि द्यावै ॥
निर्त सागर रभस, रहसि नागरि नवल, चन्द्र–चाली विविध भेदन जनावै ।
कोक विद्या विदित, भाइ अभिनय निपुन, भ्रूविलासन मकरकेतन नचावै ॥
निविड़ कानन भवन, बाहु रंजित रवन, सरस आलाप सुख पुंज बरसावै ।
उभय संगम सिन्धु, सुरत पूषन–बन्धु, द्रवत मकरन्द हरिवंश अलि पावै ॥

...

संध्याकालीन रास

श्रीलाड़लीलाल का यह अद्भुत परस्पर आकर्षणमय गान देखकर सहचरियों के हृदय में बड़ा उत्साह हुआ और प्यारीजू से विनय करती हैं – "प्यारीजू ! देखो श्रीयमुनाजी के पावन पुलिन पर कितना सुन्दर रासमण्डल है, आप कृपा करके रासमण्डल में पधारें ।"

(उपासक को इन पदों का गायन करते हुए प्रियाप्रीतम की रासलीला की भावना करनी चाहिए।)

रास थली रस दैन सुहाई । सुन्दर शोभा लखि मन भाई ॥
चाँदनि चन्द्र सखी की शोभा । छिटकी जगमगात रस गोभा ॥
शत चन्द्रानन तेज प्रकाशा । सखी मगन मन प्रेम हुलासा ॥
फुलवारी चँहु ओर सुहाई । मण्डल की शोभा छबि छाई ॥
शीतल मंद पवन सुखदाई । महकत नाना भाँति सुहाई ॥
दिव्य कनक अवनी बनी, जटी मनी बहु भाँति ॥
हीरा मुक्ता नग जड़े, झलमल मण्डल काँति ॥
आई सखीं हरषाय, मण्डल की शोभा निरखि ।
दम्पति के मन भाय, सहचरि भरीं उमंग मन ॥

....

श्याम सँग राधिका रासमण्डल बनी ।
बीच नँदलाल ब्रज बाल चम्पक बरन, ज्योंव घन तड़ित बिच कनक मर्कत मनी॥
लेत गति मान तत्त थेई हस्तक भेद, स रे ग म प ध नि ये सप्त सुर नादनी ।
निर्त्य रस पहिर पट नील प्रगटित छबी, बदन जनु जलद में मकर की चाँदनी ॥
राग रागिनि तान मान संगीत मत, थकित राकेश नभ शरद की जामिनी ।
(जैश्री) हित हरिवंश प्रभु हंस कटि केहरी, दूरि कृत मदन, मद मत्त गजगामिनी॥

....

आजु गोपाल रास रस खेलत, पुलिन कल्पतरु तीर री सजनी ।
सरद विमल नभ चन्द्र विराजत, रोचक त्रिविध समीर री सजनी ॥
चंपक बकुल मालती मुकुलित, मत्त मुदित पिक कीर री सजनी ।
देसी सुधंग राग रँग नीकौ, ब्रज जुवतिन की भीर री सजनी ॥
मघवा मुदित निसान बजायौ, व्रत छाड्यौ मुनि धीर री सजनी ।
(जैश्री) हित हरिवंश मगन मन श्यामा, हरत मदन घन पीर री सजनी ॥

श्यामाश्याम अद्भुत रासरंग में निमग्न हैं । सखियाँ उल्लसित होकर विविध प्रकार के वाद्य बजा रही हैं । प्रियाप्रीतम को उल्लसित करने वाले राग अलाप रही हैं । इतने में प्यारीजू की दृष्टि प्यारेजू के अद्भुत कान्तिमय वक्षस्थल पर पड़ी जिसमें अपनी ही प्रतिबिंबित शोभा को देखकर प्यारीजू को सम्भ्रम उत्पन्न हो गया; उन्हें लगा कि प्यारेजू अपने हृदय में एक बहुत ही सुन्दर सुन्दरी को छिपाये हुए हैं ।

एक समय श्रीराधिका कृष्ण–कांति परकास ।
आन तिया तट जानिकैं मान कियौ रस रास ॥

रसिकनी मान कियौ रस रास ।
एक समय पिय–तन में अपनौ, निज प्रतिबिम्ब प्रकाश ॥
यह संभ्रम उपजायौ उर में परतिय कोऊ पास ।
जै 'श्रीभट' हठ हरि सों करि रही, नागरि निपट उदास ॥

प्यारेजू के नीलमणीकान्ति स्वरूप वक्षस्थल पर अपना ही प्रतिबिंब देखकर के प्यारी जू को भ्रम हो गया । उन्हें लगा – 'प्रीतम अद्भुत सुन्दरी को अपने हृदय में छिपाये हैं और हमसे तो प्यार की बात करते हैं ।' इसलिये प्यारीजू मान कर गईं ।

इस प्रकार प्यारीजू के मान धारण कर लेने पर लालजू अत्यन्त व्याकुल हो गए हैं । लालजू बार-बार प्यारीजू को मना रहे हैं। अपने

वक्षस्थल पर पड़ने वाले प्यारीजू के प्रतिबिम्ब को उन्हें दिखाकर निवेदन कर रहे हैं अर्थात् समझा रहे हैं; पर हमारी भोरी लाड़िलीजू मान का त्याग नहीं कर रही हैं। लालजू की प्रार्थना पर श्री हितसजनीजू प्यारीजू से निवेदन करती हैं –

छाँड़ि दै मानिनी मान मन धरिबौ ।

प्रनत सुन्दर सुघर प्रानवल्लभ नवल,
वचन आधीन सौं इतौ कत करिबौ ॥
जपत हरि विवश तव नाम प्रतिपद विमल,
मनसि तव ध्यान तैं निमिस नहिं टरिबौ ।
घटत पल–पल सुभग शरद की जामिनी,
भामिनी सरस अनुराग दिस ढरिबौ ॥
हौं जु कछु कहत निजु बात सुनि मान सखि,
सुमुखि, बिनु काज घन विरह दुख भरिबौ ।
मिलत हरिवंश हित कुञ्ज किसलय सयन,
करत कल केलि सुख सिंधु में तरिबौ ॥

श्री हितसजनीजू के द्वारा लालजू की व्याकुलता व अधीनता का वर्णन होने पर हमारी भोरी लाड़िलीजू का मान विसर्जित हो जाता है। प्यारीजू लालजू को हृदय से लगाकर उनका विरह सन्ताप दूर करती हैं। प्रियाप्रीतम पुनः रसकेलि में निमग्न हो जाते हैं ।

व्याहुला
(प्रियाप्रीतम का विवाहोत्सव)

इस प्रकार कुसुम शैय्या पर विविध रस केलि करते हुए हमारे रसिक सिरमौर नित्यदम्पति प्रियाप्रीतम एकांतिक रंगकुंज में सुशोभित हैं। प्रियाप्रीतम की ऐसी पारस्परिक प्रेमासक्ति को निहार कर तत्सुखमयी समस्त सखियों के हृदय में परम लाड़ले युगलवर के विवाह विनोद की सुखद रचना करने की अभिलाषा का उदय हुआ। इससे प्रियाप्रीतम के प्रेमासक्तिमय आनंदोल्लास में और भी अभिवृद्धि हुई। प्रियाजू की सलज्ज एवं लालजू की मन्द मुस्कान से स्वीकृति मिलने पर युगलवर के सेवा सुख में सदा अनुरंजित रहनेवाली समस्त सखियाँ विवाहोत्सव की सेवा सौंज को एकत्र करने तथा कुंजों के श्रृंगार में निमग्न हो जाती हैं।

(उपासक को प्रियाप्रीतम के विवाहोत्सव के लिए इन सेवा सामग्रियों को एकत्रित करना चाहिए –

श्रृंगार सौंज : - **२ सेहरे, गठजोड़, विवाह संबंधी वस्त्र और आभूषण, रोरी, अक्षत (चावल), केशर, इत्र, रुई, २ कलश, २ नारियल, पल्लव, कलावा, दीपक/जोत (घृत/तिल का तेल), मंदिर के श्रृंगार के हेतु फूल-माला।**

भोग सामग्री : - **जल पीने के लिए पात्र, आचमन पात्र, जल वारने का पात्र (केशर युक्त जल), स्वादिष्ट मिष्ठान, स्वादिष्ट पेय पदार्थ, पान-बीरी, हस्त प्रक्षालन के लिए जल का पात्र, भोग का थाल ढकने के लिए कपड़ा, भोग रखने के लिए चौकी, मुख पोंछने के लिए सुकोमल वस्त्र, पीक दानी ।**

आरती सामग्री : - **एक थाली, आरती, पुष्प, जल वारने का पात्र, हस्त प्रक्षालन के लिए जल का पात्र, घंटी, मोरछल, चंवर।)**

सभी सखियाँ विवाह उत्सव की तैयारी में निमग्न हैं। कुछ विवाह मंडप का श्रृंगार कर रही हैं, कुछ सेवा सौंज को व्यवस्थित कर रही हैं, कुछ

सुंदर वाद्य के साथ मंगलगान कर रही हैं, कुछ नृत्य कर रही हैं। श्री हितसजनीजू प्रियाप्रीतम का दूलह-दुलहिन रूप में श्रृंगार कर रही हैं। वैसे ही युगल सरकार रूप के समुद्र हैं, पर आज तो उनके रोम-रोम से अद्भुत लावण्यसिंधु निर्झरित हो रहा है। दूलह-दुलहिन के रूप में श्रृंगारित, प्रियाप्रीतम की अद्भुत शोभा से सखियों के मन-प्राण का हरण हो रहा है।

(उपासक को प्रियाप्रीतम का विवाहोचित वस्त्रालंकार से सुंदर श्रृंगार करके इस पद का गायन करना चाहिए।)

बनी वृषभानुनंदिनी आजु।

भूषन-वसन विविध पहिरैं तन, पिय मोंहन हित साजु॥
हाव-भाव लावण्य भृकुटि लट, हरत जुवतिजन पाजु।
ताल भेद अवघर स्वर सूचत, नूपुर-किंकिणि बाजु॥
नव निकुंज अभिराम श्याम संग, नीकौ बन्यौ समाजु।
जै श्री हित हरिवंश विलास रास जुत, जोरी अविचल राजु ।

सखियाँ प्रियाप्रीतम को श्रृंगारित करके विवाह मंडप में लाती हैं, श्री हितसजनीजू समस्त सखियों सहित विवाह की रसरीतियाँ पूरी करती हैं।

(अब उपासक को मंदिर के सामने पर्दा लगाकर विवाह की रीतियाँ आरम्भ करना चाहिए। सर्वप्रथम लालजू के करकमल से वंशी उतार कर प्रियाजू के आसन के पास विराजमान करना चाहिए (यदि नाम सेवा / छवि सेवा है तो ऐसी भावना करनी चाहिए)। इसके बाद पहले प्रियाजू को, फिर लालजू को इत्र लगाना चाहिए। इसी क्रम से उनके ललाट पर रोली-अक्षत लगाकर, सेहरा धारण करवाना चाहिए । फिर नील और पीत वस्त्र में अक्षत डालकर गांठ लगाकर, प्रियालाल का गठजोड़ करना चाहिए।)

उपासक को विवाह की यह रीतियाँ इन पदों का गायन करते हुए पूरी करना चाहिए –

खेलत रास दुलहिनी-दूलहु।
सुनहु न सखी सहित ललितादिक, निरखि-निरखि नैंननि किन फूलहु॥
अति कल मधुर महा मोंहन धुनि, उपजत हंस-सुता के कूलहु।
थेइ-थेइ वचन मिथुन मुख निसरत, सुनि-सुनि देह दशा किन भूलहु॥
मृदु पदन्यास उठत कुमकुम रज, अद्भुत बहत समीर दुकूलहु।
कबहुँ श्याम श्यामा-दसनांचल, कच-कुच हार छुवत भुज मूलहु॥
अति लावण्य रूप अभिनय गुन, नाहिंन कोटि काम समतूलहु।
भृकुटि विलास हास रस बरसत, जैश्रीहित हरिवंश प्रेम रस झुलहू॥

(रीतियाँ पूरी करके पर्दा हटाकर ब्याहुले के पदों का गायन करना चाहिए।)

सखियनि कैं उर ऐसी आई । व्याह विनोद रचैं सुखदाई॥
यहै बात सबके मन भाई। आनँद मोद बढ्यो अधिकाई॥
बढ्यो आनँद मोद सबके, महा प्रेम सुरँग रँगीं।
और कछु न सुहाइ तिनकौं, जुगल-सेवा -सुख पगीं॥
निशि-द्यौस जानत नाहिं सजनी, एक रस भींजी रहैं।
गोप गोपिनु आदि दुर्लभ, तिहिं सुखहि दिन प्रति लहैं॥

ये नव दुलहिनि अति सुकुमारी। ये नव दूलहु लालबिहारी।
रंगभीने दोऊ प्राननि प्यारे । नव-सत अंगनि-अंग सिंगारे॥
नवसत सिंगारे अंग-अंगनि, झलक तन की अति बढ़ी।
मौर-मौरी सीस सोहैं, मैंन-पानिप मुख चढ़ी॥
जलज-सुमन सु सेहरे रचि, रतन-हीरे जगमगैं।
देखि अद्भुत रूप मनमथ, कोटि रति पाँयन लगैं॥

शोभा मंडप कुंजनि द्वारें । हित की बाँधी बंदनवारैं॥
कुमकुम सौं लै अजिर लिपायौ । अद्भुत मोतिनु चौक पुरायौ ॥

पुराइ अद्भुत चौक मोतिनु, चित्र रचना बहु करी।
आइ दोउ ठाढ़े भये तहाँ, सबनि की गति मति हरी॥
सुरंग मेंहदी रंग राचे, चरन-कर अति राजहीं।
विविध रागिनि किंकिनी अरु, मधुर नूपुर बाजहीं॥

वेदी - सेज सुदेस सुहाई । मन-दृग अंचल ग्रन्थि जुराई।
रीति भाँति विधि उचित बनाई। नेह की देवी तहाँ पुजाई॥

पूजि देवी नेह की दोउ, रति-विनोद विहारही।
तिहि समैं सखि ललितादि हित सौं, हेरि प्राननि वारही॥
एक वैस सुभाव एकै, सहज जोरी सोहनी।
एक डोरी प्रेम की 'ध्रुव', बँधे मोहन-मोहनी॥

श्रीवृन्दावन धाम रसिक मन मोहहीं।
दूलहु-दुलहिन-व्याह सहज तहाँ सोहहीं॥१॥
नित्य सहाने पट अरु भूषन साजहीं।
नित्य नवल सम वैस एक रस राजहीं॥२॥
शोभा को सिर मौर चन्द्रिका मोर की।
वरनी न जाइ कछू छबि नवल किशोर की॥३॥
सुभग माँग रँग रेख मनौं अनुराग की।
झलकत मौरी सीस सुरंग सुहाग की॥४॥
मणिनु खचित नव कुंज रही जगमग जहाँ।
छबि कौ बन्यौ वितान सोई मंडप तहाँ॥५॥
वेदी-सेज सुदेश रची अति बानिकैं।
भाँति-भाँति के फूल सुरँग बहु आनिकैं ॥६॥
गावत मोर-मराल सुहाये गीत री।
सहचरि भरीं आनन्द करत रसरीति री॥७॥

अलबेले सुकुमार फिरत तिहि ठाँव री।
दृग-अंचल परी ग्रन्थि लेत मन भाँवरी॥८॥
कँगना प्रेम अनूप कबहुँ नहिं छूटहीं।
पोयौ डोरी रूप सहज सो न टूटहीं॥९॥
रचि रहे कोमल कर अरु चरन सुरंग री।
सहज छबीले कुँवर निपुन सब अंग री॥१०॥
नूपुर कंकन किंकिनि बाजे बाजहीं।
निर्तत कोटि अनंग-नारि सब लाजहीं॥११॥
बाढ्यौ है मन माँहिं अधिक आनन्द री।
फूले फिरत किशोर वृन्दावन चन्द री॥१२॥

इस प्रकार अत्यन्त प्रेमोल्लास के साथ सभी सखियों ने विवाह की रीतियाँ पूर्ण कीं। श्री हितसजनीजू ने दूधाभाती का समय जान कर भोग लाने के लिए संकेत किया। सखियाँ सुंदर-सुंदर भोग सामग्री लाकर प्रियाप्रीतम के समक्ष सुंदर चौकी पर विराजमान करती हैं। श्री हितसजनीजू प्रियाप्रीतम का सेहरा उतार कर उन्हें सुंदर भोग पवा रही हैं।

(उपासक को दूधाभाती के समय इन पदों का गायन करते हुए प्रियालाल के समक्ष सुंदर थाल में भोग पधराकर पर्दा कर देना चाहिए। इसके बाद प्रियाप्रीतम का सेहरा तथा गठजोड़ उतार कर क्रम से (पहले प्रियाजू, फिर लालजू को) भोग पवाते हुए प्रसादी को अलग पात्र में रखते जाना चाहिए।

"वाम चरण सों सीस लाल को लावहीं। पानी वारि कुँवरि पर पियहिं पिवावहीं॥" – **इस पद के समय प्रियाजू पर केशर युक्त जल वार कर लालजू को पिलाना चाहिए। इसके बाद प्रियालाल को भोग पवाके आचमन कराना चाहिए। सुकोमल वस्त्र से मुख पोंछ कर उन्हें पान-बीरी पवाकर पीकदानी में उगार करवाना चाहिए।)**

सखियन किये बहु चार अनेक विनोद री।
दूधाभाती हेत बढ्यौ मन मोद री ॥१३॥
ललित लाल की बात जबहि सखियन कही।
लाज सहित सुकुमारि ओट पट दै रही ॥१४॥
नमित ग्रीव छबि-सीव कुँवरि नहिं बोलहीं।
बुधि बल करत उपाय घूंघट पट खोलहीं ॥१५॥
कनक कमल कर नील कलह अति कल बनी।
हँसति सखी सुख हेरि सहज शोभा घनी ॥१६॥
वाम चरन सौं सीस लाल कौ लावहीं।
पानी वारि कुँवरि पर पियहिं पिवावहीं ॥१७॥
मेलि सुगन्ध उगार सों वीरी खवावहीं।
समुझि कुँवर मुसिकाइ अधिक सुख पावहीं ॥१८॥
और हास-परिहास रहसि रस रँग रह्यौ।
नित्यविहार-विनोद यथामति कछु कह्यौ ॥१९॥
अंचल ओटि असीस सखी सब दैंहि री।
पल-पल बढ़ौ सुहाग नैंन सुख लैंहि री ॥२०॥
जैसे नवल विलास नवल-नवला करें।
मन-मन की रुचि जानि नेह-विधि अनुसरैं ॥२१॥
बैठी हैं निजु कुंज कुँवरि मन मोहनी।
झलकत रूप अपार सहज अति सोहनी ॥२२॥
चाहि-चाहि सो रूप रसिक सिरमौर री।
भरि आये दोउ नैंन भई गति और री ॥२३॥
अति आनँद कौ मोद न उरहिं समात री।
रीझि-रीझि रस भीजि आपु बलि जात री ॥२४॥
अरुझे मन अरु नैंन बढ्यौ अनुराग री।

एक प्रान द्वै देह नागर अरु नागरी ॥२५॥
यौं राजत दोउ प्रीतम हँसि मुसिकात री।
निरखि परस्पर रूप न कबहुँ अघात री ॥२६॥
तिनहीं के सुख रंग सखी दिन रँगमगीं।
और न कुछ सुहाइ एक रस सब पगीं ॥२७॥
उभय रूप रस सिन्धु मगन जहाँ सब भये।
दुर्लभ श्रीपति आदि सोइ सुख दिन नये ॥२८॥
(श्री) हित ध्रुव मंगल सहज नित्य जो गावहीं।
सर्वोपरि सोई होइ प्रेम रस पावहीं ॥२९॥

इस प्रकार सखियों ने विवाह की समस्त रीतियों को सम्पन्न कराकरके नव दूलह-दुलहिन सरकार को सुंदर सिंहासन पर विराजमान कराया। नव दम्पत्ति की अपूर्व रूपमाधुरी, उनकी अद्भुत प्रेमासक्ति, रसमयी चेष्टाओं का पान अपने नेत्रों से करते हुए सखियाँ प्रेम विह्वल हो रही हैं। उनके हृदय में युगल सरकार के प्रति अपार वात्सल्य उमड़ रहा है। श्री हितसजनीजू प्रेम में डूबकर समस्त सखियों सहित प्रियालाल को आशीष दे रही हैं।

(उपासक को आशीष के पद का गायन करते हुए लालजू को वंशी धारण करवानी चाहिए ।)

लाड़ी जू थारो, अविचल रहो जी सुहाग।

अलकलड़े रिझवार छैल सौं, नित नव बढ़ो अनुराग ॥
यों नित विहरो ललितादिक सँग, वृन्दावन निजु बाग।
(जैश्री) रूप अली हित जुगल-नेह लखि, मानत निजु बड़भाग ॥

•••

सैंन (शयन) समय

इस प्रकार श्रीहितसजनीजू ने प्रियाप्रीतम को विवाह विनोद का अद्भुत सुख प्रदान किया। फिर समस्त सखियाँ प्यारीजू और प्यारेजू को अर्घ्य दान एवं पुष्पांजलि अर्पित करते हुए शयन कुंज में ले जा रही हैं –

अरघ बढ़ाइ भवन सखि लीयौ ।
दिन दूलह दिन दुलहिनि राधा मोहन कें सुख सरसतु हीयौ ॥
दिन दिन मंगल मानति दूनौ गौर स्याम कौतिक अस कीयौ ।
वृन्दावन हित रूप बलि गई छबि अबलोकि बारि जल पीयौ ॥

सखियों ने अत्यन्त सुन्दर फूलमहल (फूल बंगला) की रचना की है। नव दूलह-दुलहिन श्री प्रियाप्रीतम को प्रीतिपूर्वक लाकर सखियों ने पुष्पों से श्रृंगारित इस फूलमहल में सुंदर सिंहासन पर विराजमान किया। चंद्रा सखी आकाश में चंद्रमा के रूप में प्रकाशित होकर सुंदर चाँदनी का विस्तार कर रही हैं। प्रियाप्रीतम रंगबिरंगे पुष्पों से निर्मित फूलबंगले में दूलह-दुलहिन के रूप में विराजमान हैं –

मंजुल निकुंज फूल-फूलनि रची री ।
लाल-पीत-सेत सुमन-सोसनी खची री ॥
फूल जाल रन्ध्रनि में चन्द्रमनी कौंधैं ।
लजी कोटि दामिनी की आँखैं चकचौंधैं ॥
दुखनन-तिखनन झमक झरोखनि झाँई ।
नाना विधि फूलनि की सौरभ महकाई ॥
मोतिन-वितान तने जोतिन जगमगीं ।
चन्द्र की मयूषन पग-भूषन है लगीं ॥
फूलनि सिंहासन पर बैठे पिय-प्यारी ।
वदन की जोति फूल फैली उजियारी ॥

हमारे नवयुगल परस्पर आसक्ति में डूबे हुए कभी रसभरी बातें करते हैं, कभी हास-परिहास करते हैं तो कभी विविध रसमयी चेष्टाएँ कर रहे हैं। हमारे युगल सरकार के श्रीअंगों में महाप्रेममय मदन का भाव प्रकट हो रहा है। लालजू विविध रसमयी चेष्टाओं द्वारा शैयाविहार के भाव को प्रकट करना चाह रहे हैं।

लाड़ भरी बातनि रस ढरके ।

परम कौतुकी लाल सखी री हँसि मिस करि आवत ढिंग सरके ॥
कबहूँ उर मणिं चौकी देखत, कबहूँ परसत भूषन करके ।
कबहूँ तन ऐंड़ात जोरि कर, बचन जनावत आलस भर के ॥
कबहूँ बीरी देत प्रिया मुख सूचत सुख बंसीबट तर के ।
कबहूँ कहत सखी श्रवननि लगि भेद भीतरे उर अन्तर के ॥
कबहूँ जागि उठतु हिय मनसिज आवतु झलकि नैंन छबि अरके ।
सैंननि ही मनुहारि करत अति देखौ छंद बंद रसिक सुघर के ॥
कैसैं होतु अधीन प्रिया कें बिपुल मनोरथ मुरलीधर के ।
वृन्दावन हित रूप बलि गई पियु जाचक रस पान अधर के ॥

प्रियाप्रीतम की ऐसी रसमयी चेष्टाओं का दर्शन करके श्री हितसजनीजू उनकी प्रेमासक्ति का वर्णन करते हुए कह रही हैं –

सखी हौं जानति दोऊनि मन की ।

ऐसेई सदा देखिवौ कीजै सफल मानि जीवन की ॥
अपनी बुद्धि बिचारत हारत थाह न इनके पन की ।
उत सनेह इत रूप गर्वता चातक रट ज्यों घन की ॥
यह जोरी यह लाड़ परावधि थाती सहचरि जन की ।
यह सुहाग राधा को बरनत उपमा नसी त्रिभुवन की ॥
बिनुमित सिन्धु रूप हित सजनी रसिक धनी पुनि धन की ।
छिन-छिन भरत मनोरथ सरवर स्वामिनि वृन्दावन की ॥

सैंन (शयन) भोग

प्रियाप्रीतम के मन की रुचि को समझकर समस्त सखियाँ प्रियालाल को शयन भोग पवाने की तैयारी करती हैं। सखियों ने श्रीचंपकलताजू के द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट कचौरी, पुआ, पूरी, मोहन भोग, इमरती, मुरब्बा, कई तरह की तरकारी, शाक, खीर आदि युगलसरकार के सामने पधराया। श्री हितसजनीजू अपने करकमल से प्रियालाल को शयन भोग पवा रही हैं।

(उपासक को इन पदों का गायन करते हुए प्रियालाल को शयन भोग पवाना चाहिए ।)

प्रथम जाम जामिनि बीती जब ।
मन की जानी सखी सयानी सैन भोग भरि थार धर्‌यौ तब ॥
मोदक मधुर मधुर बहु घृत पक मन दै चम्पकलता किये सब ।
वृन्दावन हित रुचि सौं जेंवत नव नागरि नागर पिय नित नव ॥

....

भोजन सैन समय करवावत ।
लुचई मोहनभोग इमरती, मिश्री फैंनी दूध मिलावत ॥
दृग कोरनि मधि हँसत परस्पर, रद छद परसत ललन खवावत ।
करत राधा-मोहन व्यारू, बैठे सदन मिलि सोहैं ॥
इक थारी एकै जल झारी, एक वैस इक रूप उजारी ।
मधु मेवा पकवान मिठाई, दंपति अति रुचिकारी ॥
प्यारी कैं कर पावत प्यारौ, प्यारे कैं कर पावत प्यारी ।
दूध सिराइ लै आईं श्रीललिता, प्यारीजू पियौ लाल करै मनुहारी ॥

सखियाँ बीच-बीच में हास्य विनोद भी करती जाती हैं । कभी हितसजनीजू प्यारीजू और प्यारेजू को पवा रही हैं, कभी प्यारीजू प्यारेजू को, कभी प्यारेजू प्यारीजू को ।

इस प्रकार प्रियालाल के भोग आरोग लेने के बाद श्री ललिताजू इलाईची, केशर, बादाम, मेवा और मिश्री से युक्त अत्यन्त स्वादिष्ट और सुगंधित अधौटा दूध उचित रूप से शीतल करके लाती हैं। लालजू प्यारीजू से दूध पीने के लिए मनुहार करते हैं। हमारी अति सुकुमारी लाड़िलीजू लालजू की ओर देखकर हँसते हुए दूध पीने लगती हैं –

हँसि-हँसि दूध पीवत बाल ।

मधुर वर सौंधें सुवासित, रुचिर परम रसाल ॥
भ्रुव भंग रंग अनंग वितरत, चितै मोहन ओर ।
सुधानिधि मनौं प्रेम धारा, पुषित तृषित चकोर ॥
(प्यारौ) लाल रस लंपट सु कर, अँचवाय मुख छवि हेर।
लेत तब अवशेष आपुन, परे मनमथ फेर ॥

तत्पश्चात् श्रीहितसजनीजू ने यमुनाजल से प्रियाप्रीतम को आचमन कराया और सुन्दर पान की बीरी पवाई । इस प्रकार सखियों ने युगल सरकार को शयन भोग पवाया।

•••

सैंन (शयन) आरती

प्रियालाल को शयन भोग पवाकर सखियाँ शयन आरती तैयार करके लाईं। श्री हितसजनीजू समस्त सखियों के साथ प्रियालाल की शयन आरती कर रही हैं।

(उपासक को आरती की वर्णित सेवा सौंज के द्वारा प्रियालाल की शयन आरती इन पदों का गायन करते हुए करनी चाहिए ।)

रस निधि सैन आरती कीजै । निरखि-निरखि छबि जीवन जीजै ॥
मणि-नग जगमग जोति जगमगै । दम्पत्ति रूप प्रकाश रँगमगै ॥

सहचरि चँवर मोरछल ढोरैं । पुहुप वृष्टि अंजुलि चहुँ ओरैं ॥
झाँझ ताल झालरि दुन्दुभि-रव । निर्त्य गान अलि हरति मनोभव ॥
महा मोद धुनि मधुर मृदंगा । जै जै बानी मिलि इक संगा ॥
यह सुख रसिक उपासक गावैं । जै श्रीलालरूप हित चित्त दुलरावैं ॥

....

जै जै हो श्रीराधे जू मैं शरण तिहारी । प्यारी शरण तिहारी ॥
लोचन आरती जाऊँ बलिहारी । जै जै हो श्रीराधे जू मै शरण तिहारी ॥
पाट पटम्बर ओढ़े नील सारी । सीस के सैंदुर जाऊँ बलिहारी ॥
रतन (फूल) सिंहासन बैठी श्रीराधे । आरती करैं हम पिय संग जोरी ॥
झलमल झलमल मानिक मोती । अब लख मुनि मोहे पिय संग जोरी ॥
श्रीराधे पद पंकज भगति की आशा, दास मनोहर करत भरोसा ॥
श्रीराधा कृष्ण जू की जाऊँ बलिहारी । जै जै हो श्रीराधे जू मै शरण तिहारी॥

आरती के बीच-बीच में प्यारीजू और प्यारेजू की पलकें आलसवश झपक जा रही हैं। सखियों ने प्रियालाल को श्रमित जानकर शीघ्र ही शयन आरती सम्पन्न की।

•••

सैंन (शयन) के पद

नींद के वश होकर प्यारीजू कभी-कभी लालजू के गोद में सिर रख देती हैं। सभी सखियों ने प्रियालाल को शयन परायण जान कर उन्हें आग्रह पूर्वक शैय्या पर ले जाकर विराजमान कराया। सखियों ने पहले से ही प्रियाप्रीतम के शयन हेतु वृन्दावन के अतिशय सुकोमल पत्र-पुष्प एवं पराग के द्वारा अत्यन्त सुन्दर शैया की रचना की हुई है और शैया के पास ही सुन्दर स्वर्ण पात्रों में स्वादिष्ट भोग पदार्थ पान-बीरी एवं स्वर्ण कलशों में विविध

स्वादिष्ट पेय प्रियालाल के निशीथ भोग हेतु रखे हैं । प्रियाप्रीतम सुखपूर्वक आलिंगित होकर शैया पर शयन करते हैं । श्री हितसजनीजू एवं श्री ललिताजू प्रियालाल के चरणों का सम्वाहन कर रही हैं । सखियाँ कुंजरन्ध्रों से प्रियालाल के शैया विहार की शोभा का अपने नेत्रों से पान कर रही हैं ।

(उपासक को कोमल वस्त्रों अथवा सुगंधित पुष्पों के द्वारा शैय्या की रचना करके पास में निशीथ भोग हेतु एक पात्र में पान-बीरी एवं मिष्ठान और एक जल की झारी रखनी चाहिए। इसके बाद प्रियालाल को शैय्या पर शयन कराकर प्रीति पूर्वक चरण सम्वाहन करते हुए इस पद का गायन करना चाहिए।)

नागरी निकुंज ऐन किसलय दल रचित सैन,
कोक-कला-कुशल कुँवरि अति उदार री ।
सुरत रंग अंग-अंग हाव-भाव भृकुटि भंग,
माधुरी तरंग मथत कोटि मार री ॥
मुखर नूपुरन सुभाव किंकिनी विचित्र राव,
विरमि-विरमि' नाथ बदत वर बिहार री ।
लाड़िली किसोर राज हंस-हंसिनी समाज,
सींचत हरिवंश नयन सुरस-सार री ॥

(हिमऋतु में प्रियाप्रीतम को कंबल आदि गरम वस्त्रों में शयन कराते हुए इन पदों का गायन करना चाहिए।)

रंगमहल बैठे गलबहियाँ, हिमरितु करत प्रसंश धनी-धन।
मूरति लाड़ उभय देखि सजनी, आजु भयौ चाहत मन इक तन॥
नेह निहोरि देत मुख बीरी, वेदनि मरम जनावत मन-मन।
वन्दावन हित रूप असीसत, शोभा लखि बलि जात सखीजन॥

....

वल्लवी सु कनक वल्लरी तमाल स्याम संग,
लागि रही अंग अंग मनोभिरामिनी।
वदन जोति मनौं मयंक अलक तिलक छबि कलंक ,
छपति स्याम अंक मनौं जलद दामिनी॥
विगत वास हेम खंभ मनौं भुवंग वैंनी दंड,
पिय के कंठ प्रेम पुंज कुंज कामिनी।
(जैश्री) शोभित हरिवंश नाथ साथ सुरत आलस वंत,
उरज कनक कलस राधिका सुनामिनी॥

....

राजत दंपति मृदुल सेज पर, ओढ़ैं स्याम सुदेस रजाई।
कंचन के फूल सौं लाल रुई झलकत, सिंगार-भूमि तामें-
प्रीति-फुलवारी, सींचि अनुराग खिलाई॥
झमकि रही ललितादिक चहुँ दिसि, जाल रन्ध्र है निरखत शोभा,
तहाँ कछू उपमा मन आई।
प्रेमदासि हित मनौं सैंन-गृह, चन्द्रमान की पहिरी माला,
झलमलात अछवाई॥

(इस प्रकार प्रियाप्रीतम को शयन कराकर मंदिर का पर्दा लगा देना चाहिए। उपासक को प्रसाद ग्रहण करके गुरुजनों के स्मरण पूर्वक नाम/मंत्र जप करते हुए अगले दिन की सेवार्थ शयन करना चाहिए।)

•••

प्रगट भाव की नींव दृढ़ कीजै कृपा मनाय।
तब निश्चल हित-महल-रस रहै चित्त ठहराय ॥

श्री जी की प्रगट सेवा को रसोपासना का आधार माना गया है। भगवत् कृपा से जो उपासक प्रगट सेवा में अपने अंतःकरण को पूर्ण रूप से आसक्त कर लेता है, उसके हृदय में प्रियाप्रियतम का यह दुर्लभ नित्यविहार रस अवश्य स्थित हो जाता है।

श्री हित राधा केलि कुंज ट्रस्ट
वाराह घाट, परिक्रमा मार्ग, वृंदावन